पेज नं-3

योगी सरकार का बड़ा शिक्षा अभियानः पढ़ाई में पीछे छूटे बच्चों के लिए शुरू होगा 'कैच-अप शिक्षण अभियान'

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

एक्सपर्ट टाइम्स

RNI No.- DLBIL/26/A3806

www.xperttimes.com

नईदिल्ली, शनिवार, 01 अगस्त 2026 से 31 अगस्त 2026 तक वर्ष– 01 अंक–02 पृष्ठ–04 मासिक मूल्य– 50 रुपए

असम की बाढ़ ने छीना सब कुछः तबाही के बीच जिंदगी फिर से संवारने की जंग

जितेन्द्र कुमार

असम एक बार फिर भीषण बाढ़ की त्रासदी से जूझ रहा है। लगातार हो रही भारी बारिश और ब्रह्मपुत्र नदी समेत उसकी सहायक नदियों के उफान ने राज्य के कई जिलों को जलमग्न कर दिया है। हजारों परिवारों को अपने घर छोड़ने पड़े हैं, खेती की जमीन पानी में डूब गई है, सड़कें और पुल क्षतिग्रस्त हो गए हैं, जबकि लाखों लोगों का सामान्य जीवन पूरी तरह अस्त-व्यस्त हो गया है। कई पीड़ितों का कहना है कि इस बाढ़ ने उनसे 'सब कुछ छीन लिया' और अब उन्हें अपनी जिंदगी दोबारा शुरू करने की चुनौती का सामना करना पड़ रहा है।

बाढ़ का सबसे बड़ा असर ग्रामीण इलाकों पर पड़ा है, जहां अधिकांश लोग खेती और पशुपालन पर निर्भर हैं। धान, सब्जियां और अन्य फसलें पानी में पूरी तरह नष्ट हो चुकी हैं। किसानों ने बीज, खाद और सिंचाई पर अपनी पूरी पूंजी लगा दी थी, लेकिन कुछ ही दिनों में उनकी महीनों की मेहनत बाढ़ के पानी में बह गई। कई परिवारों के सामने अब रोजी-रोटी का संकट खड़ा हो गया है। घरों के डूब जाने से हजारों लोग राहत शिविरों में रहने को मजबूर हैं। स्कूलों, सामुदायिक भवनों और सरकारी इमारतों को अस्थायी राहत शिविरों में बदल दिया गया है। यहां भोजन, पीने का पानी, दवाइयां और आवश्यक सामान उपलब्ध कराया जा रहा है, लेकिन बड़ी संख्या में लोगों के पहुंचने से कई शिविरों में भीड़ और संसाधनों की कमी जैसी समस्याएं सामने आ रही हैं। बच्चों की पढ़ाई पर भी बाढ़ का गहरा असर पड़ा है। कई स्कूल पानी में डूब गए हैं या उन्हें राहत शिविर बना दिया गया है। हजारों बच्चों की किताबें, कॉपियां और

स्कूल यूनिफॉर्म बाढ़ में बह गई हैं। शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि लंबे समय तक स्कूल बंद रहने से बच्चों की पढ़ाई पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

स्वास्थ्य सेवाओं के सामने भी बड़ी चुनौती है। बाढ़ के बाद दूषित पानी के कारण डायरिया, हैजा, टाइफाइड और त्वचा संबंधी बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। वहीं, जगह-जगह जमा पानी मच्छरों के पनपने के लिए अनुकूल वातावरण बनाता है, जिससे डेंगू और मलेरिया जैसी बीमारियों का जोखिम भी बढ़ जाता है। स्वास्थ्य विभाग की टीमें राहत शिविरों में मेडिकल कैंप लगाकर लोगों का इलाज कर रही हैं और साफ पानी तथा स्वच्छता बनाए रखने की अपील कर रही हैं। बाढ़ का असर केवल इंसानों तक सीमित नहीं है। असम का प्रसिद्ध काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान भी बाढ़ से प्रभावित हुआ है। यहां रहने वाले एक सींग वाले गैंडे, हाथी, हिरण और अन्य वन्यजीव ऊंचे स्थानों की ओर पलायन करने को मजबूर हैं। इस दौरान कई जानवर सड़कों को पार करते समय दुर्घटनाओं का शिकार हो जाते हैं। वन विभाग और स्वयंसेवी संगठन लगातार वन्यजीवों की सुरक्षा के लिए निगरानी कर रहे हैं। बचाव और राहत कार्यों में राष्ट्रीय आपदा मोचन बल, राज्य आपदा मोचन बल, भारतीय सेना, वायुसेना, पुलिस और स्थानीय प्रशासन लगातार जुटे हुए हैं। नावों और हेलीकॉप्टरों की मदद से हजारों लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया है। कई इलाकों में जहां सड़क संपर्क टूट गया है, वहां हवाई मार्ग से खाद्य सामग्री और दवाइयां पहुंचाई जा रही हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि जलवायु परिवर्तन के कारण अत्यधिक बारिश की घटनाएं पहले की तुलना में अधिक तीव्र और अनियमित हो गई हैं। इसके अलावा वनों की कटाई, नदी किनारों का कटाव, आर्द्रभूमियों का सिकुड़ना और अनियोजित शहरीकरण भी बाढ़ की गंभीरता बढ़ाने वाले प्रमुख कारण हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि केवल राहत कार्य पर्याप्त नहीं होंगे, बल्कि दीर्घकालिक समाधान के लिए मजबूत बाढ़ प्रबंधन प्रणाली, बेहतर जल निकासी, नदी प्रबंधन और पर्यावरण संरक्षण पर गंभीरता से काम करना होगा। राज्य और केंद्र सरकार ने प्रभावित परिवारों को आर्थिक सहायता देने की घोषणा की है। क्षतिग्रस्त घरों, फसलों और बुनियादी ढांचे का सर्वेक्षण किया जा रहा है ताकि पुनर्वास कार्य जल्द शुरू किया जा सके। किसानों के लिए मुआवजा, मकानों के पुनर्निर्माण और सड़कों-पुलों की मरम्मत जैसी योजनाओं पर भी काम किया जा रहा है।

इस भीषण आपदा के बीच इंसानियत की कई प्रेरणादायक तस्वीरें भी सामने आई हैं। स्थानीय लोग, स्वयंसेवी संगठन, युवा और सामाजिक संस्थाएं राहत सामग्री वितरित कर रही हैं। कई मछुआरों ने अपनी नावों से लोगों को सुरक्षित स्थानों तक पहुंचाया, जबकि युवाओं ने राहत शिविरों में भोजन और दवाइयां पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हालांकि कई इलाकों में पानी धीरे-धीरे उतरना शुरू हो गया है, लेकिन असली संघर्ष अब शुरू हुआ है। हजारों परिवारों को अपने घर दोबारा बनाने होंगे, किसानों को फिर से खेती शुरू करनी होगी और बच्चों को स्कूल लौटना होगा। यह सफर आसान नहीं होगा, लेकिन असम के लोगों ने हर संकट में अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति और साहस का परिचय दिया है। यह बाढ़ केवल एक प्राकृतिक आपदा नहीं, बल्कि जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय चुनौतियों की गंभीर चेतावनी भी है। यदि समय रहते प्रभावी कदम नहीं उठाए गए, तो भविष्य में ऐसी त्रासदियां और अधिक विनाशकारी हो सकती हैं। फिलहाल पूरे देश की निगाहें असम पर हैं, जहां लोग उम्मीद, हिम्मत और एकजुटता के सहारे अपनी जिंदगी को फिर से पटरी पर लाने की कोशिश कर रहे हैं।

जापान में 7.1 तीव्रता के भूकंप के बाद मॉल में भीषण विस्फोट, कई लोगों की मौत, राहत-बचाव अभियान जारी

जितेन्द्र कुमार

जापान में आए 7.1 तीव्रता के शक्तिशाली भूकंप ने कुछ ही मिनटों में भयावह तबाही का रूप ले लिया। भूकंप के तेज झटकों के बाद एक व्यस्त शॉपिंग मॉल में हुए भीषण विस्फोट ने पूरे इलाके को दहला दिया। इस दोहरी आपदा में कई लोगों की मौत हो गई, जबकि दर्जनों लोग घायल हुए हैं। कई लोगों के मलबे में फंसे होने की आशंका के बीच राहत और बचाव कार्य लगातार जारी है। प्रशासन ने प्रभावित क्षेत्र में आपातकालीन व्यवस्था लागू कर दी है और लोगों से सतर्क रहने की अपील की है। भूकंप उस समय आया जब मॉल में बड़ी संख्या में लोग खरीदारी कर रहे थे। अचानक धरती जोर-जोर से कांपने लगी, जिससे लोग अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर भागने लगे। दुकानों की अलमारियां गिर गईं, शीशे टूट गए और कई जगहों पर छत का हिस्सा भी नीचे आ गया। लोग किसी तरह बाहर निकलने की कोशिश कर ही रहे थे कि अचानक एक जोरदार धमाके ने पूरे इलाके को हिला दिया।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार विस्फोट इतना शक्तिशाली था कि कई किलोमीटर दूर तक उसकी आवाज सुनाई दी। धमाके के बाद मॉल से काले धुएं का विशाल गुबार उठने लगा। आग तेजी से कई दुकानों तक फैल गई और इमारत का एक हिस्सा भरभराकर गिर गया। मलबे में कई लोग दब गए, जबकि आसपास खड़े वाहन भी क्षतिग्रस्त हो गए। घटनास्थल पर अफरा-तफरी का माहौल बन गया और लोग अपने परिवार के सदस्यों की तलाश में इधर-उधर दौड़ते दिखाई दिए। घटना की सूचना मिलते ही दमकल विभाग, पुलिस, एम्बुलेंस और आपदा राहत दल मौके पर पहुंच गए। सबसे पहले आग पर काबू पाने की कोशिश शुरू की गई, ताकि बचाव कार्य सुरक्षित तरीके से किया जा सके। इसके बाद विशेष प्रशिक्षित रेस्क्यू टीमों ने मलबे में फंसे लोगों को निकालने का अभियान शुरू किया। आधुनिक थर्मल कैमरों, ड्रोन, सेंसर उपकरणों और खोजी कुत्तों की मदद से जीवित लोगों की तलाश की जा रही है। बचाव कार्य आसान नहीं है, क्योंकि भूकंप के बाद लगातार आफ्टरशॉक महसूस किए जा रहे हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि कमजोर हो चुकी इमारत कभी भी और गिर सकती है। इसी वजह से रेस्क्यू टीम बेहद सावधानी से मलबा हटा रही है। भारी मशीनों की सहायता से बड़े-बड़े कंक्रीट के टुकड़ों को हटाया जा रहा है, जबकि छोटे हिस्सों में हाथों से भी खोज अभियान चलाया जा रहा है। घायलों को तुरंत नजदीकी अस्पतालों में पहुंचाया गया, जहां डॉक्टरों और मेडिकल स्टाफ को हाई अलर्ट पर रखा गया है। कई मरीजों को गंभीर चोटें आई हैं, जिनमें सिर पर गहरी चोट, हड्डियां टूटना, जलना और धुएं के कारण सांस लेने में परेशानी शामिल है। अस्पतालों ने अतिरिक्त डॉक्टरों और नर्सों को बुलाया है ताकि सभी घायलों का समय पर इलाज किया जा सके। सरकारी अधिकारियों ने कई लोगों की मौत की पुष्टि की है, हालांकि मृतकों की संख्या बढ़ने की आशंका जताई जा रही है क्योंकि अभी भी कई लोग लापता हैं। मॉल के बाहर परिजन अपने प्रियजनों की जानकारी मिलने का इंतजार कर रहे हैं। प्रशासन ने हेल्पलाइन नंबर भी जारी किए हैं ताकि लोग अपने परिजनों की जानकारी प्राप्त कर सकें। प्रारंभिक जांच में माना जा

रहा है कि भूकंप के दौरान गैस पाइपलाइन या बिजली की लाइनों को नुकसान पहुंचा होगा, जिससे गैस रिसाव हुआ और बाद में विस्फोट हो गया। हालांकि अधिकारियों ने स्पष्ट किया है कि विस्फोट के वास्तविक कारण का पता विस्तृत तकनीकी जांच के बाद ही चल सकेगा। विशेषज्ञ पूरे घटनाक्रम की बारीकी से जांच कर रहे हैं।

जापान सरकार ने राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्रणाली को तुरंत सक्रिय कर दिया है। स्थानीय प्रशासन, पुलिस, सेना, दमकल विभाग और आपदा प्रबंधन एजेंसियां मिलकर राहत कार्य चला रही हैं। पड़ोसी क्षेत्रों से अतिरिक्त राहत दल और भारी उपकरण भी प्रभावित इलाके में भेजे गए हैं। सरकार ने प्रभावित परिवारों को हरसंभव सहायता देने का आश्वासन दिया है। भूकंप के कारण पूरे क्षेत्र में जनजीवन प्रभावित हुआ है। कई इलाकों में बिजली और पानी की आपूर्ति बाधित हो गई है। गैस सप्लाई एहतियात के तौर पर बंद कर दी गई है ताकि कोई और दुर्घटना न हो। रेल सेवाएं और कई सड़क मार्ग भी अस्थायी रूप से बंद कर दिए गए हैं, जबकि इंजीनियर पुलों और इमारतों की सुरक्षा जांच कर रहे हैं। प्रशासन ने स्कूलों, सामुदायिक भवनों और खेल परिसरों में अस्थायी राहत शिविर बनाए हैं। यहां प्रभावित लोगों को भोजन, पीने का पानी, दवाइयां, कंबल और अन्य जरूरी सामान उपलब्ध कराया जा रहा है। स्वयंसेवी संगठन भी राहत कार्य में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं और लोगों की हर संभव मदद कर रहे हैं। भूकंप विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि आने वाले दिनों में और भी आफ्टरशॉक आ सकते हैं। लोगों से अपील की गई है कि वे क्षतिग्रस्त इमारतों में प्रवेश न करें, केवल सरकारी निदेर्शों का पालन करें और अपने पास आपातकालीन किट तैयार रखें, जिसमें भोजन, पानी, टॉर्च, दवाइयां और प्राथमिक उपचार की सामग्री हो। यह त्रासदी एक बार फिर याद दिलाती है कि आधुनिक तकनीक और मजबूत आपदा प्रबंधन व्यवस्था होने के बावजूद प्रकृति की शक्ति के सामने इंसान पूरी तरह सुरक्षित नहीं है। फिलहाल पूरे जापान की नजरें राहत और बचाव अभियान पर टिकी हैं। हर गुजरते घंटे के साथ उम्मीद की जा रही है कि मलबे में फंसे और लोगों को सुरक्षित बाहर निकाला जा सके। देश इस कठिन समय में एकजुट होकर पीड़ित परिवारों के साथ खड़ा है और प्रभावित क्षेत्रों को फिर से सामान्य बनाने की दिशा में लगातार प्रयास जारी हैं।

धर्मेंद्र प्रधान ने शिक्षा मंत्री पद से दिया इस्तीफा, X पर पोस्ट कर दी जानकारी

उमा सक्सेना

नई दिल्ली: केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने अपने पद से इस्तीफा देने की घोषणा की है। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म X पर पोस्ट साझा करते हुए कहा कि उन्होंने अपना त्यागपत्र प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भेज दिया है। अपने संदेश में धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि उन्होंने शुरूआत से ही इस पूरे घटनाक्रम की नैतिक जिम्मेदारी स्वीकार की थी और कभी भी परिस्थितियों से मुंह नहीं मोड़ा। उन्होंने लिखा कि पिछले कुछ दिनों की घटनाओं से उन्हें व्यक्तिगत रूप से दुख पहुंचा है, लेकिन यह उनके लिए व्यक्तिगत प्रतिष्ठा का विषय नहीं है। उन्होंने अपने बयान में यह भी कहा कि जंतर-मंतर और देश के अन्य हिस्सों में बने हालात का कोई भी राष्ट्रविरोधी तत्व फायदा न उठा सके और देश की एकता एवं सामाजिक सद्भाव बनाए रखना सभी की जिम्मेदारी है। धर्मेंद्र प्रधान ने अपने विस्तृत संदेश में कहा कि वह पिछले चार दशकों से छात्र, शिक्षक और शिक्षा सुधार के लिए समर्पित रहे हैं। उनके अनुसार, एक मजबूत, समावेशी और दूरदर्शी शिक्षा व्यवस्था ही सशक्त राष्ट्र की आधारशिला है। उन्होंने देश के युवाओं की आकांक्षाओं और उनकी न्यायोचित अपेक्षाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए कहा कि युवाओं के सपनों को साकार करना सार्वजनिक जीवन का नैतिक दायित्व है। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनके नेतृत्व में देश की सेवा करने का अवसर मिलना उनके लिए सम्मान की बात रही।

पीएम मोदी के खिलाफ आपत्तिजनक पोस्ट पर दिल्ली पुलिस का बड़ा एक्शन, X से मांगी यूजर्स की पूरी जानकारी

अंजली सिंह

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म X (पूर्व में ट्विटर) पर कथित तौर पर की गई आपत्तिजनक और अभद्र टिप्पणियों को लेकर दिल्ली पुलिस ने बड़ा कदम उठाया है। पुलिस ने इस मामले में प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफआईआर) दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। साथ ही संबंधित सोशल मीडिया अकाउंट्स की पहचान करने के लिए से यूजर्स की जानकारी भी मांगी गई है। इस कार्रवाई ने एक बार फिर सोशल मीडिया पर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, ऑनलाइन जिम्मेदारी और साइबर कानूनों को लेकर नई बहस छेड़ दी है। पुलिस अधिकारियों के अनुसार, उन्हें कई शिकायतें मिली थीं जिनमें आरोप लगाया गया था कि X पर कुछ अकाउंट्स से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ अभद्र, अपमानजनक और आपत्तिजनक भाषा का इस्तेमाल किया गया। शिकायतों की प्रारंभिक जांच के बाद दिल्ली पुलिस ने मामला दर्ज कर साइबर सेल को विस्तृत जांच की जिम्मेदारी सौंपी। जांच के तहत पुलिस ने को एक आधिकारिक नोटिस भेजकर उन अकाउंट्स से जुड़ी जानकारी मांगी है जिनसे कथित तौर पर विवादित पोस्ट किए गए। पुलिस ने अकाउंट रजिस्ट्रेशन विवरण, आईपी एड्रेस, लॉगिन हिस्ट्री, डिवाइस की जानकारी और अन्य तकनीकी रिकॉर्ड उपलब्ध कराने का अनुरोध किया है ताकि संबंधित यूजर्स की पहचान की जा सके। दिल्ली पुलिस का कहना है कि यह साइबर अपराधों की जांच में अपनाई जाने वाली सामान्य प्रक्रिया है। अधिकारियों ने स्पष्ट किया है कि अभी जांच शुरूआती चरण में है और किसी भी व्यक्ति को दोषी नहीं माना गया है। सभी तथ्यों और डिजिटल साक्ष्यों की जांच के बाद ही आगे की कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

यह मामला ऐसे समय सामने आया है जब सोशल मीडिया देश में राजनीतिक बहस का सबसे बड़ा मंच बन चुका है। लाखों लोग प्रतिदिन विभिन्न मुद्दों पर अपनी राय व्यक्त करते हैं। हालांकि, इसी के साथ ऑनलाइन ट्रोलिंग, फर्जी खबरें, अभद्र भाषा, फेक अकाउंट्स और नफरत फैलाने वाली सामग्री की घटनाएं भी लगातार बढ़ रही हैं। साइबर विशेषज्ञों का कहना है कि इंटरनेट पर किए गए हर पोस्ट का एक डिजिटल रिकॉर्ड मौजूद रहता है। भले ही कोई व्यक्ति फर्जी अकाउंट का इस्तेमाल करे या अपनी पहचान छिपाने की कोशिश करे, लेकिन तकनीकी जांच और सोशल मीडिया कंपनियों के सहयोग से कई मामलों में संबंधित व्यक्ति तक पहुंचा जा सकता है। कानूनी विशेषज्ञों के अनुसार, भारतीय संविधान प्रत्येक नागरिक को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार देता है। कोई भी व्यक्ति सरकार की नीतियों की आलोचना कर सकता है और लोकतांत्रिक तरीके से अपनी असहमति व्यक्त कर सकता है। लेकिन यदि किसी पोस्ट में कथित तौर पर आपराधिक धमकी, हिंसा के लिए उकसाना, घृणा फैलाना या कानून का उल्लंघन करने वाली सामग्री शामिल हो, तो उस पर कानूनी कार्रवाई की जा सकती है।

शिक्षा को कारोबार बनाने का आरोप, मनुस्मृति के उल्लेख पर राज्यसभा में हंगामा

एजेंसी

नई दिल्ली। राज्यसभा में लोक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) (संशोधन) विधेयक, 2026 पर चर्चा के दौरान नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने केंद्र सरकार की शिक्षा नीति पर निशाना साधा। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार की नीतियों के कारण शिक्षा एक बड़े कारोबार में बदल गई है और इसका सबसे अधिक नुकसान गरीब परिवारों के बच्चों को उठाना पड़ रहा है। उन्होंने मनुस्मृति का उल्लेख किया और कहा कि शिक्षा में वंचित वर्गों के साथ भेदभाव किया जाता था। मनुस्मृति का उल्लेख किए जाने पर सत्ता पक्ष के सदस्यों ने कड़ी आपत्ति जताई, जिससे सदन में हंगामा हो गया। खड़गे के इस वक्तव्य पर नेता सदन जेपी नड्डा ने कहा, ह्लअभी नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने जो वक्तव्य दिया है, उससे समाज में द्वेष की भावना पैदा होती है और अशांति का वातावरण बनता है। हम सभी इस सदन के जिम्मेदार सदस्य हैं। जहां तक मेरी जानकारी है, उन्होंने जो बातें कही हैं, वे तथ्यों से परे हैं।ह्व खड़गे ने कहा कि शिक्षा अब एक बड़ा कारोबार बन चुकी है। निजी शिक्षण संस्थानों की संख्या लगातार बढ़ रही है, और इसकी वजह से गरीब परिवारों के बच्चे सबसे अधिक प्रभावित हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि देश में उच्च शिक्षा संस्थानों की संख्या 70,000 से अधिक है, जिनमें लगभग 4 करोड़ 50 लाख छात्र अध्ययन कर रहे हैं, लेकिन अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के छात्रों का नामांकन आज भी राष्ट्रीय औसत से कम है।

उन्होंने यह भी कहा कि दिव्यांग छात्रों की भागीदारी केवल 0.12 प्रतिशत है। उन्होंने कहा कि यह स्थिति उस सोच का प्रतीक है, जो शिक्षा को सबका अधिकार नहीं बल्कि कुछ लोगों का विशेषाधिकार मानती है। उनके अनुसार सरकार की नीतियां बार-बार उस मनुवादी सोच की याद दिलाती हैं, जिसका उल्लेख मनुस्मृति में मिलता है। इसके बाद खड़गे ने कहा कि वह मनुस्मृति का एक श्लोक पढ़ना चाहते हैं, लेकिन संस्कृत अच्छी तरह नहीं पढ़ पाने के कारण उसका हिंदी अनुवाद पढ़ेंगे। जैसे ही उन्होंने इसका उल्लेख शुरू किया, सत्ता पक्ष के सदस्यों ने विरोध जताना शुरू कर दिया और सदन में शोर-शराबा होने लगा। हंगामे के बीच सभापति ने हस्तक्षेप करते हुए कहा कि यदि किसी सदस्य को आपत्ति है तो उस पर विचार किया जाएगा, लेकिन भाषण विचाराधीन विधेयक तक सीमित रखा जाए। उन्होंने खड़गे से अपना भाषण शीघ्र पूरा करने का भी आग्रह किया। इसके बाद खड़गे ने कहा कि उन्होंने अपने भाषण में शिक्षकों की संख्या, पाठ्यक्रम और शिक्षा व्यवस्था से जुड़े कई तथ्य रखे हैं। उन्होंने कहा कि सरकार समान और न्यायपूर्ण शिक्षा तथा विश्वविद्यालयों में अच्छे शिक्षकों और कुलपतियों की नियुक्ति की बात करती है, लेकिन पाठ्यक्रम में जिन बातों को शामिल किया जा रहा है, वे चिंता का विषय हैं। इसके बाद उन्होंने मनुस्मृति के एक कथित अंश का उल्लेख करना शुरू किया, जिस पर सत्ता पक्ष ने फिर विरोध दर्ज कराया। लगातार हंगामे के बीच सभापति ने दोबारा हस्तक्षेप करते हुए उनसे कहा कि वे विधेयक से जुड़े विषयों पर ही अपनी बात रखें।

नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे द्वारा मनुस्मृति का उल्लेख किए जाने पर सदन में तीखी नोकझोंक देखने को मिली। इसके जवाब में सदन के नेता जेपी नड्डा ने खड़गे के बयान पर कड़ी आपत्ति जताते हुए कहा कि इस तरह के वक्तव्य से समाज में द्वेष और अशांति का वातावरण पैदा होता है। उन्होंने कहा कि मनुस्मृति के मूल पाठ को प्रमाणित किया जाना चाहिए। जिस पुस्तक का उल्लेख किया गया है, वह मूल पाठ नहीं है। पहले यह प्रमाणित किया जाए कि वह प्रामाणिक है। नड्डा ने सभापति से आग्रह किया कि मनुस्मृति के बारे में कही गई बातों को सदन की कार्यवाही का हिस्सा नहीं बनाया जाएगा।

सम्पादकीय

छोटे परिवार, बड़े संकट

देश के बहुचर्चित 'हनीमून मर्डर' केस की सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट की एक बेंच ने आधुनिक जीवनशैली से पारिवारिक विघटन पर जो गंभीर टिप्पणी की, मानो उसने भारतीय समाज की दुखती रग पर हाथ रख दिया। सोनम रघुवंशी मामले में मेघालय सरकार की याचिका पर सुनवाई करते हुए न्यायमूर्ति एम.एम. सुंदरेश और न्यायमूर्ति पी.बी. वराले की बेंच ने गंभीर टिप्पणी की कि आज पति-पत्नी के रिश्तों में भरोसा कम हो रहा है। पहले संयुक्त परिवार रिश्तों को संभालते थे। संयुक्त परिवार इंसान को निराशा सहना और एडजस्ट करना सिखाते थे। लेकिन आज छोटे परिवारों की व्यवस्था के कारण पुरुषों व महिलाओं में डिप्रेशन बढ़ रहा है। लोग छोटी-छोटी बातों में चिढ़ने लगते हैं। गैजेट्स की लत ने इस संकट को और बढ़ाया है। जस्टिस सुंदरेश ने तो यहां तक कहा कि आज बच्चा किसी बात पर जरा रो दे, माता-पिता उसे मोबाइल थमा देते हैं। निस्संदेह, भावनाओं का विकल्प कभी गैजेट्स नहीं हो सकते। धीरे-धीरे बच्चों को इस मोबाइल की लत लग जाती है। उनकी एकाग्रता भंग होने लगती है। भले ही अदालत के समक्ष एक संगीन अपराध का मामला था, लेकिन उसने उस गंभीर संकट के मर्म पर चोट की है, जिससे आए दिन परिवार बिखराव की दहलीज पर खड़े नजर आते हैं। विडंबना देखिए कि जिस भारतीय समाज में 'तलाक' के लिये कोई शब्द ही नहीं था, वहां अदालतों में रिश्तों को तोड़ने वालों की भीड़ लगी है। यहां तक कि एक बार अदालत को कहना पड़ा कि पारिवारिक झगड़ों के कारण महत्वपूर्ण कानूनी मामलों पर दबाव बढ़ रहा है। एक समय था कि पश्चिमी जगत में भारतीय परिवार संस्था की सार्थकता व समृद्ध परंपराओं की दुहाई दी जाती थी। लेकिन आज उसी भारत ने पश्चिमी समाज का अंधानुकरण करके एकल परिवार को जीवन का लक्ष्य बना लिया है। जिसके चलते लाखों परिवार संक्रमणकालीन दौर से गुजर रहे हैं। जिससे पारिवारिक संस्था संकटों से जूझ रही है। हाल के दिनों में विवाह से ठीक पहले और विवाह के ठीक बाद के, कई वीभत्स हत्याकांड सामने आए हैं, जिन्होंने हर संवेदनशील व्यक्ति को झकझोरा है। निर्मम हत्या करने वाली महिला के पति व मंगेतरों के पास प्रतिष्ठा, अचल संपत्ति व बैंक बैलेंस की कोई कमी नहीं थी। निस्संदेह, धन-सपंदा व भारी चमक-दमक से जीवन का सुख नहीं खरीदा जा सकता। संत कबीरदास ने सदियों पहले कह दिया था कि3 जब आए संतोष धन सब धन धूरि समान। तभी तो तमाम समृद्धि व विलासिता के साधनों के बावजूद लोग खुश नहीं हैं। ऐसे में घातक कदम उठाने वाले महिलाओं व पुरुषों की परवरिश में भी कहीं न कहीं कोई कमी जरूर रह गई है। पहले साझे परिवारों में दादा-दादी या नाना-नानी, अपने जीवन के कठिन अनुभवों व नफे-नुकसान से हासिल ज्ञान से बेटे-बेटियों व पोते-पोतियों को सीख देते थे। जीवन मूल्यों की कहानियां सुनाया करते थे। संयुक्त परिवार में माता-पिता को किसी अप्रत्याशित झटके झेलने वाला सुरक्षा कवच माना जाता था। दुख-दर्द का मुकाबला साझे रूप में करने से वह कम महसूस होता था। घर की सुरक्षा बनी रहती थी। बूढ़ी मां भले ही शारीरिक रूप से अक्षम होती, लेकिन भरोसा बना रहता था कि घर में मां तो है। पिता तो हैं। अब जब पति-पत्नी असीमित इच्छाओं की पूर्ति के लिये काम पर चले जाते हैं तो घर किसके सहारे रहे? बच्चा किसके भरोसे रहे? कामवाली के? जो चंद पैसों के लिये घर में काम करने आती है। जो वहां आकर अपने घर के अभावों व दुख की तुलना इस घर की समृद्धि से करती है। वही घर के बच्चे की देखभाल के साथ अपने संस्कार भी देती है। दरअसल, आज परिवार में रिश्तों से बड़े अहमङ् हो गए हैं। इगो का टकराव अकसर रिश्तों के बिखराव की वजह बनता है। कोई झुकने को तैयार नहीं होता है तो परिवार को टूटने से कौन रोकेगा? जाहिर है जो बात पति-पत्नी के बीच नहीं बनी, वो कोर्ट-कचहरी में क्या बनेगी? अलगाव का त्रास मनमुटाव से ज्यादा भयावह होता है। तभी तो अदालतों में तलाक की अर्जियों की संख्या दिन-दुगनी और रात चौगुनी गति से बढ़ रही है।

तेल संकटों का प्रभाव कम हुआ, लेकिन नजर अंदाज नहीं किए जा सकते

पश्चिमी एशियाई खाड़ी क्षेत्र अस्थिरता और असंतुलन की स्थिति में हैं। होर्मुज जलडमरूमध्य को फिर से खोलने के लिए कोई स्थायी समझौता नहीं हो पाया है क्योंकि अमरीका और ईरान की मांगें अभी भी एक-दूसरे से बहुत अलग हैं। इस नवंबर में होने वाले अमरीका में मध्यावधि चुनावों से पहले ईरान के पास अमरीकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की तुलना में अधिक प्रभाव है। पूर्ण समझौते के अभाव में, झड़पों की संभावना बहुत अधिक है, जो पूर्ण युद्ध की ओर लौटने के बढ़ते खतरे में परिलक्षित होती है। फिर भी, इस उम्मीद पर शेयर बाजारों में तेजी आई कि अस्थायी युद्धविराम से पूर्ण समझौता हो जाएगा और तनाव में हालिया वृद्धि पर बाजारों की प्रतिक्रिया संयमित रही। विकास और मुद्रास्फीति के लिहाज से समग्र आर्थिक प्रभाव अपेक्षाकृत कम रहा है। वैश्विक तेल आपूर्ति में अब तक की सबसे बड़ी बाधा होने के बावजूद, 1970 के दशक के तेल संकटों का प्रभाव कहीं अधिक था। ईरान की रणनीति तेल के शस्त्रीकरण पर केंद्रित है, जो एक लंबा इतिहास रहा है। कुछ इतिहासकार तर्क देते हैं कि प्रथम विश्व युद्ध में जर्मनी की हार का एक कारण यह था कि मित्र देशों द्वारा लगाई गई समुद्री नाकाबंदी से उसे तेल नहीं मिल पा रहा था। इसी प्रकार, जापान ने पर्ल हार्बर में अमरीकी बेड़े पर हमला करने का घातक निर्णय इसलिए लिया क्योंकि अमरीकी राष्ट्रपति फ्रेंकलिन रूजवेल्ट के प्रशासन ने चीन पर आक्रमण करने के कारण उस पर तेल प्रतिबंध लगा दिया था, और स्टालिन ने बाद में दावा किया कि नाजियों की द्वितीय विश्व युद्ध में हार इसलिए हुई क्योंकि सोवियत संघ ने धुरी शक्तियों को काकेशस में तेल क्षेत्रों पर कब्जा करने से रोक दिया था। 1970 के दशक के बाद, ओपेक उत्पादक देशों ने महसूस किया कि तेल का हथियार के रूप में इस्तेमाल करना उल्टा पड़ सकता है। तेल की कीमतों में इतना बड़ा उछाल जिससे वैश्विक मुद्रास्फीति और आर्थिक संकट पैदा हो जाए अंततः तेल की मांग और कीमतों में भारी गिरावट का कारण बनेगा जैसा कि 1981-82 में हुआ था। इसलिए सऊदी अरब और अन्य खाड़ी देशों जैसे कुछ जिम्मेदार देश भू-राजनीतिक झटकों के कारण तेल की कीमतों में अचानक वृद्धि होने पर आपूर्ति बढ़ाने के लिए तैयार और सक्षम रहे हैं। इसके अलावा 1970 के दशक से ऊर्जा दक्षता में हुई प्रगति के कारण उत्पादन और उपभोग में आयातित तेल का हिस्सा कम होता जा रहा है। ओपेक की बाजार शक्ति में गिरावट आई है क्योंकि इसके सदस्यों ने एकजुट होकर आगे बढ़ने की आवश्यकता की बजाय अपने हितों को प्राथमिकता दी है (संयुक्त अरब अमीरात हाल ही में इससे अलग हुआ है) और आपूर्ति के नए स्रोत सामने आए हैं, विशेष रूप से अमरीका में शैल ऊर्जा क्रांति के बाद। 1970 के दशक के आर्थिक संकटों के बाद, अमरीका, यूरोप, चीन और जापान सहित प्रमुख तेल उपभोक्ताओं ने रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार भी जमा कर लिए थे, जिन्हें कीमतों में उछाल आने पर इस्तेमाल किया जा सकता था (जो इस वर्ष मजबूती का एक प्रमुख स्रोत रहा)। तेल के विकल्प-प्राकृतिक गैस, नवीकरणीय ऊर्जा और नए सुरक्षित मॉड्यूलर परमाणु रिएक्टर ने लोकप्रियता और बाजार हिस्सेदारी हासिल कर ली है। भविष्य में, ऊर्जा की वैश्विक मांग का एक बढ़ता हुआ हिस्सा इलैक्ट्रिक वाहनों और बैटरियों के माध्यम से ऐसी बिजली से पूरा किया जाएगा जिसका उत्पादन तेल के बिना किया जा सकता है। तीसरा, तेल संकटों के प्रति मानक व्यापक नीतिगत प्रतिक्रिया (राजकोषीय और मौद्रिक दोनों) में सुधार हुआ है, जिससे मुद्रास्फीति की उम्मीदों ने 1970 के दशक जैसी अस्थिरता को रोकने में मदद मिली है। और आंशिक रूप से इन्हीं कारकों के परिणामस्वरूप, तेल संकट 1970 के दशक के संकटों की तुलना में कम दीर्घकालिक और कम समय तक चलने वाले हो गए हैं, जो लगभग एक दशक तक चले थे। 1990-91 का तेल संकट नौ महीने तक चला, 2000-01 का संकट उससे भी कम समय तक चला और पिछले साल के 12 दिवसीय युद्ध के बाद का संकट केवल कुछ हफ्तों तक ही रहा। अंत में, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि पिछले परिदृश्यों के विपरीत, जिनमें मैक्रो और बाजार के रुझान तेल संकट से प्रभावित थे और जिसके परिणामस्वरूप कुल आपूर्ति में नकारात्मक गिरावट आई थी, वर्तमान स्थिति में, आई निवेश में तेजी के रूप में एक दीर्घकालिक सकारात्मक कुल आपूर्ति में गिरावट देखी जा रही है। - नौरियल रौबिनी

लोकजतन सम्मान समारोह के साथ ही शैली स्मृति व्याख्यानमाला शुरू

राजेंद्र शर्मा बोले - मीडिया के लिए सबसे संकटमय और चुनौतीपूर्ण समय

उपेंद्र यादव

भोपाल। 24 जुलाई की शाम दुष्यंत कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय भोपाल में हुए एक गरिमामय समारोह में देश के वरिष्ठ पत्रकारों में से एक राजेन्द्र शर्मा (नई दिल्ली) को श्लोकजतन सम्मानश् 2026 से सम्मानित किया गया। वे 1979 में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से पढ़ाई पूरी करने के बाद ही परिवर्तनकामी, प्रतिबद्ध पत्रकारिता के प्रति समर्पित रहे हैं। अनेक किताबों के लेखक, कई अखबारों के स्तंभकार, कई महत्वपूर्ण प्रकाशनों के सम्पादक तथा लोकलहर के सम्पादक हैं। उन्होंने अपनी पत्रकारिता की शुरुआत इसी अखबार से की थी। व्यंगकार एवं कवि वीरेन्द्र जैन की अध्यक्षता में उन्हें प्रदेश के वरिष्ठतम संपादकों में से एक डॉ. राम विद्रोही ने सम्मान पत्र भेंट किया। अपने संबोधन में राजेन्द्र शर्मा ने मीडिया की वर्तमान स्थिति पर चिंता व्यक्त की और अफसोस जताया कि जिस देश में मीडिया ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में इतनी प्रमुख भूमिका निबाही थी कि हर महतवपूर्ण नेता स्वयं अखबार निकालता था ,पत्रकार और सम्पादक होता था, आज उसी मीडिया को जंतर मंतर पर जनता के रोष और बहिष्कार का शिकार होना पड़ रहा है। भारत की जनता का युवतम हिस्सा उसका बॉयकॉट करते हुए कह रहा है कि तुम हमारी अभिव्यक्ति के लायक होने का अधिकार खो चुके हो। यह आज ही नहीं हो रहा -- 6 वर्ष पहले किसानों के ऐतिहासिक आन्दोलन से ही मीडिया भर्त्सना और धिक्कार का शिकार बना हुआ है। जनता का विरोधी समझे जाने की इस स्थिति तक पहुँच जाने के पीछे के कारण स्पष्ट करते हुए राजेंद्र शर्मा ने कहा कि मीडिया के बड़ी पूँजी के सम्पूर्ण कब्जे में आने और इनके द्वारा पिछड़ी और साम्प्रदायिक ताकतों के साथ गठजोड़ कर लिए जाने के बाद से हालात और बिगड़े हैं। 2014 में केंद्र में सत्ता परिवर्तन के बाद से तो जैसे मीडिया को जनता के विरुद्ध हथियार के रूप में ही तब्दील कर दिया गया है। लोग मुख्य धारा के मीडिया को अपने जीवन से बाहर कर रहे हैं। मीडिया से जुड़े एक हर व्यक्ति के लिए यह दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है। हालांकि इस संकट और चुनौतियों के दौर में भी अनेक अखबार और खासतौर से यूट्यूबर और युवा पत्रकार अच्छी भूमिका निबाह रहे हैं और इसके चलते शासन और पुलिस के दमन का शिकार भी बन रहे हैं। आज के ही समारोह में कोरोना लॉकडाउन के दौरान 2020 के लोकजतन सम्मान से अभिनंदित छत्तीसगढ़ के जन पक्षधर पत्रकार कमल शुक्ला को भी मानपत्र भेंट किया गया। उन्होंने कहा कि पत्रकारिता सिर्फकलम चलाना और लिखना भर नहीं है। पत्रकार का जुड़ाव जनता के साथ होना चाहिए। सच्ची पत्रकारिता जनपक्षधर और प्रतिबद्ध होती है। लोकजतन के सम्पादक बादल सरोज ने बताया कि यह सम्मान हर वर्ष लोकजतन के संस्थापक-सम्पादक शैलेन्द्र शैली (24 जुलाई 1957 - 07 अगस्त 2001) के जन्मदिन 24 जुलाई को दिया जाता है स इससे ऐसे पत्रकारों को सम्मानित किया जाता है, जो भारतीय पत्रकारिता के आज के दुरूसमय में भी सच बोलने और लिखने का दुस्साहस कर रहे हैं। इस सम्मान से अभी तक डॉ. राम विद्रोही (ग्वालियर), कमल शुक्ला (बस्तर-रायपुर), लज्जा शंकर हरदेनिया (भोपाल), अनुराग द्वारी (भोपाल), राकेश अचल (ग्वालियर), पलाश सुरजन (भोपाल), शहीद पत्रकार मुकेश चंद्राकर (बस्तर) जैसे प्रमुख पत्रकारों को अभिनंदित किया जा चुका है। समारोह का संचालन वरिष्ठ कहानीकार, संस्कृतिकर्मी मनोज कुलकर्णी ने किया। आभार प्रदर्शन संध्या शैली ने किया। इस अवसर पर अनेक पत्रकार, साहित्यकार, सामाजिक कार्यकर्ता, प्रबुद्ध नागरिक एवं जन आंदोलनों से जुड़े नागरिक उपस्थित थे। झूठ को सच, अयथार्थ को यथार्थ बनाने के लिए इस्तेमाल की जा रही है फिल्में रू शैली स्मृति व्याख्यान में बोले जवरीमल्ल पारख लोकजतन सम्मान समारोह के साथ ही मध्यप्रदेश में शैलेन्द्र शैली स्मृति व्याख्यानमाला शुरू हो गई। 2026 की श्रृंखला का पहला व्याख्यान प्रख्यात फिल्म समीक्षक एवं कला संस्कृति के अध्येता जवरीमल्ल पारख ने इसी समारोह में दिया। उन्होंने मौजूदा दौर में फिल्मों -- विशेषकर हिंदी फिल्मों -- के जबरदस्त दुरुपयोग की स्थिति सामने रखी। उन्होंने कहा कि फिल्मों की यह क्षमता है कि वे झूठ को सच, अयथार्थ को यथार्थ बनाकर दिखा सकती हैं रू सत्ता वर्गों ने इसका भयानक दुरुपयोग किया है। मध्य युग के इतिहास की झूठी व्याख्या करने वाली फिल्मों में भारत के समुदाय के एक बड़े हिस्से, मुसलमानों, को विदेशी शत्रु के रूप में दिखाया जा रहा है और उस वास्तविक भाईचारे को ध्वस्त किया जा रहा है, जो हमेशा अस्तित्वमान रहा है। यह ठीक वही काम है, जो हिटलर ने यहूदियों को निशाना बनाकर किया था। उन्होंने कहा कि आजादी के आंदोलन को विकृत किया जा रहा है। असली क्रांतिकारी ओझल किए जा रहे हैं -- माफी मांगने वाले श्वीरश् बताये जा रहे हैं। व्यवस्थित और योजना के साथ निवेश करके प्रोपेगेंडा फिल्म्स की बाढ़-सी आना इसी का उदाहरण है। फिल्में भरमाने का जरिया बन गई हैं। पारख ने रेखांकित किया कि अच्छी बात है कि इतने दबाव के बावजूद कई फिल्में ऐसी भी बनी हैं, जिन्होंने वह भूमिका निभाई है, जो निबाहनी चाहिए। इस सिलसिले में उन्होंने हाल की फिल्मों के उदाहरण भी दिए। आज से शुरू हुई शैली स्मृति व्याख्यान श्रृंखला 7 अगस्त तक जारी रहेगी और प्रदेश भर में तीन दर्जन से अधिक स्थानों पर सेमिनारध्संवाद आयोजित किए जायेंगे। व्याख्यान की शुरुआत भोपाल के वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता और सीटू के प्रदेश अध्यक्ष पूषण भट्टाचार्य के परिचयात्मक संबोधन से हुई। सुश्री वंदना शर्मा भी मंच पर उपस्थित थीं।

बूढ़ी काकी कहानी की सीख क्या है?

बाबा मायाराम

इस माह की 31 जुलाई को प्रसिद्ध उपन्यासकार और कहानीकार प्रेमचंद की जयंती है। उनकी कहानियां बचपन से हम पढ़ते आ रहे हैं। उनका जन्म गांव में हुआ, वहां पढ़े-बढ़े, मास्टरी की, गांव और समाज को देखा। गांवों में रहे, उनके दुख-दर्द से जुड़े, उसे महसूस किया और उन पर कहानियों व उपन्यासों की रचना की। इस कॉलम में उनकी बुजुर्गों पर एक कहानी बूढ़ी कहानी व उनके जीवनी पर नजर डालना चाहूंगा, जिससे उनके लेखन व व्यक्तित्व की झलक मिल सके। यह तो सभी जानते हैं कि उनका जन्म 31 जुलाई, 1880 को बनारस के पास लमही गांव में हुआ था। बचपन में ही उनके माता-पिता का निधन हो गया। घर की जिम्मेदारियों के साथ पढ़ाई की, और शिक्षक की नौकरी की। नौकरी के बाद भी पढ़ाई जारी रखी। बाद में शिक्षा विभाग में स्कूलों का मुआयना करने वाले अधिकारी(इंस्पेक्टर) पद पर नियुक्त हुए। राष्ट्रीय आंदोलन से प्रभावित हुए। गांधी और टालस्टाय का प्रभाव रहा। इसलिए नौकरी छोड़ कर पूरी तरह लेखन करने लगे। कहानियां, उपन्यास, स्तंभ, लेख लिखे। उनकी कई कहानियां बहुत ही प्रसिद्ध हैं। उनका जीवन सीधा सादा था। उन्होंने अपने जीवन के बारे में लिखा है कि मेरा जीवन सपाट, समतल मैदान है, जिसमें कहीं-कहीं गड्ढे तो हैं, पर टीलों, पर्वतों, घने जंगलों, गहरी घाटियों और खंडहरों का स्थान नहीं। उनके बेटे और साहित्यकार अमृतराय ने उनकी जीवन कलम के सिपाही में बतलाया है कि प्रेमचंद के लिए लिखने के क्या मायने हैं। जैसे खाना-पीना, सोना जागना, जिंदगी के और सब काम बिना नागा होते हैं, तब लिखने के काम में नागा क्यों हो? प्रेमचंद ने हमारे गांव, समाज, किसान को नजदीकी से देखा। गांव में उनका जन्म ही हुआ, वे पलेकृबढ़े भी वहीं, पर बाद में नौकरी के दौरान कई गांवों में जाने का मौका मिला। वहां के दुख-दर्द को महसूस किया, उस पर लिखा, बल्कि खूब लिखा। बल्कि वे एक किसान की ही तरह थे, किसान कुदाल चलाता है, और वे कलम चलाते थे। एक जगह वे किसानों के बारे में लिखते हैं कि शुरू से ही मैं उन्हीं के बीच रहा, पला, बढ़ा। उठाकृबैठा, बोला बतियाया। खुद हल नहीं जोता तो क्या, उनका राई रत्ती तो जानता हूं। क्या खाते हैं, क्या पहनते हैं। क्या ओढ़ते हैं, क्या सोचते हैं, क्या कहते हैं, सब तो मैंने देखा है, सुना है। प्रेमचंद की कहानियां हम स्कूल के दिनों से पढ़ते आ रहे हैं। नमक का दरोगा, ईदगाह, पंच परमेश्वर, बूढ़ी काकी इत्यादि। इसके बाद उनके उपन्यास व अन्य कहानियां भी पढ़ी। इनमें खेत, किसान, और गांव से जुड़ी कई कहानियां का सजीव वर्णन है। जब कभी भी मैं गांव जाता हूं, प्रेमचंद की कहानियों के पात्र याद आ जाते हैं। अगर हम प्रेमचंद की बुजुर्गों की उपेक्षा पर बूढ़ी काकी की कहानी की बात करें तो उसमें एक बुजुर्ग महिला, जिसे कहानी में बूढ़ी काकी कहा गया है, उनके भतीजे बुद्धिराम को अपनी सारी संपत्ति लिख देती है। क्योंकि उनके पति व बेटे की मौत हो जाती है। लेकिन उसकी उचित देखभाल तो दूर उसे दुत्कार, उपेक्षा व प्रताड़ना सहना पड़ता है। बुद्धिराम खुद व उसकी पत्नी रूपा उन्हें बार-बार प्रताड़ित करते हैं, उस पर अत्याचार करते हैं। लेकिन इस दंपति की छोटी लड़की लाड़ली को काकी से प्रेम था। वह उनके पास बैठती थी, उसे बातें करती थी। वह काकी की भी दुलारी थी। एक दिन बुद्धिराम के बड़े बेटे का तिलक था। घर में मेहमान आए थे। पकवान बन रहे थे। पूड़ी-कचौड़ियां निकल रही थीं। मसालेदार तरकारी पक रही थी। मसालें की सुगंध चारों तरफफैल रही थी। बूढ़ी काकी एक कोठरी में रहती थी। उसे भी भूख लगी थी। उससे रहा न गया और वह सरक कर चूल्हे के पास आ गई। यह देखकर रूपा ने काकी को झिड़कियां दीं। और भला-बुरा कहा। काकी वापस कोठरी में चली गईं। इसी प्रकार एक बार और आई, इसके बाद रूपा के पति ने उसे पकड़कर कोठरी में पटक कर आ गए। जब सब मेहमान चले गए। लाड़ली, जो दंपति की छोटी बेटी थी, उसे काकी की याद थी, वह जानती थी कि उसने खाना नहीं खाया, वह उसके भोजन में रोटी बचाकर काकी को लाकर देती है, पर काकी का उनसे पेट नहीं भरता। वह उससे कहती है कि उसे जूठी पत्तलों के पास लेकर चल, लाड़ली उनका आशय न समझकर वहां ले जाती है। काकी पत्तलों को चाटने लगती है। वह पूड़ियों के टुकड़े उठाकर खाती है। इसी समय रूपा की नींद खुल जाती है। वह यह दृश्य देखकर सन्न रह जाती है। करूणा से भर जाती है। और उसे अपने किए पर पश्चाताप होता है। और उसे भरपेट भोजन खिलाती है। आज भी समाज में कई बुजुर्गों को उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है। मैं कई बुजुर्गों से बात करते रहता हूं, और कुछ वृद्धा आश्रमों में गया हूं। संयुक्त परिवारों में अब बुजुर्गों का वैसा सम्मान नहीं होता, जैसा पहले कभी होता था। उनकी उपेक्षा होती है। जबकि बच्चों के अच्छे पालन-पोषण में बुजुर्गों की अच्छी भूमिका होती है। परवरिश अच्छी होती है। बचपन में बुजुर्गों से सुनी कहानियां व उनके साथ बिताए पल सदैव ही याद रहते हैं। बुजुर्ग न केवल जीवन के अनुभव बताते हैं, बल्कि कई हुनर भी सिखाते हैं, जिनसे जिंदगी चलती है। वे कम चीजों में रहना सिखाते हैं, उन्हें बापरना सिखाते हैं। प्रकृति के साथ सामंजस्य कर जीना सिखाते हैं। वे मौखिक व परंपरागत ज्ञान के भंडार हैं। जीवन की खुली किताब हैं। उनसे बहुत ही सीखा जा सकता है। उनकी छांव में रहना सुकून व शांति देता है। जीवन की कठिनाईयों, चुनौतियों का सामना करना सिखाता है। हिम्मत देता है। इसी तरह प्रेमचंद की किसान, गांव और समाज पर ढेरों कहानियां हैं। जिनमें समाज की कुरीतियां, अभाव, गरीबी झलकती है। इनसे लड़ने की प्रेरणा भी है। जीने की जिजीविषा भी, संघर्ष भी है। कुल मिलाकर, प्रेमचंद ने जो देखा, जो महसूस किया, वह लिखा, वह आज भी प्रेरणा देता है। उन्होंने समाज की समस्याएं, कुरीतियों, देश की गुलामी, राष्ट्रीय आंदोलन सब लिखा, कहानियों व उपन्यासों के माध्यम से रचनात्मक ढंग से कलम चलाई। बूढ़ी काकी ने न केवल बुजुर्गों की उपेक्षा को दर्शाया है, बल्कि करूणा और प्रेम को जगाया है, बुजुर्गों के प्रति सम्मान व संवेदनशीलता दिखाना चाहिए, जिसकी आज भी उस समय से ज्यादा जरूरत है। क्या हम प्रेमचंद की कहानियां से कुछ सीख लेना चाहेंगे?

कॉकरोच आंदोलन को रोकने-कुचलने या समझने के पुराने तौर-तरीके काम न आएंगे!

मुकुल सरल

बहुत लोग पूछते हैं कि आप युवाओं के इस कॉकरोच आंदोलन को कैसे देखते-समझते हैं। तो एक चश्मदीद गवाह के तौर पर यह टिप्पणी लिख रहा हूंदृ यह अंतिम राय नहीं है, क्योंकि किसी आंदोलन के बीच में अंतिम निष्कर्ष पर पहुंचना मैं ठीक नहीं समझता। पहले दिन से अब तक जो देखा-समझा, वह यह है कि कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के नाम से युवाओं का यह आंदोलन कोई परंपरागत आंदोलन नहीं है, जिसके पीछे पहले से गठित कोई पार्टी या संगठन या उसकी ठोस वैचारिकी होती है, एक अनुशासित कैडर होता है, जो अपने नेता के हर निर्देश का पालन करता है। इसलिए इसे किसी एक नेता के निर्देश पर, किसी एक नेता को मैनेज करके या लाठी-गोली के परंपरागत दमन के तरीकों से कुचला नहीं जा सकता और न परंपरागत तरीके से इसका विश्लेषण किया जा सकता है। हालांकि यह भी सोचना गलत होगा कि बिना किसी राजनीति या संगठन के बिना यह आंदोलन शुरू हो गया। लेकिन अब यह सिर्फसीजेपी का आंदोलन नहीं रहा, बल्कि युवाओं का अपना आंदोलन बन गया है और अब तो यह यह जंतर-मंतर से निकल कर पूरे देश में फैल गया है। शिक्षा के सवाल पर यह नये दौर का आंदोलन है, जिसे हम जेन-जी यानी जेनरेशन जेड कहते हैं उसका आंदोलन। जिस पर किसी एक पार्टी विशेष या विचारधारा का टैग या बोझ नहीं है, जिसमें विभिन्न रंग-ढंग और विचार के युवा हैं। लड़के भी, लड़कियां भी। कुछ राजनीतिक विचारधारा से लैस हैं, पुराने संघर्ष के साथी, तो बहुत से पहली बार किसी आंदोलन में आए हैं, जो किसी भी विचारधारा से दूर हैं। बहुत से तो कल तक खुद को अराजनीतिक कहते थे। लेकिन मुद्दे की समझ सबको है। सबको अपने भविष्य की चिंता है। ये बच्चे पेपर लीक और शिक्षा में सुधार के लिए साफशब्दों में सरकार से जवाबदेही और इसके लिए जिम्मेदार शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग कर रहे हैं। इससे कम पर कोई समझौता नहीं। यह युवा किसी से नहीं डरता, यह बेखौफहै। यह भी कह सकते हैं कि इनमें से बहुतों को सत्ता की चालाकियों और क्रूरता और बाद में होने वाले परिणामों का भी एक भी अंदाजा या अनुभव नहीं है। इनमें गरीब-दलित के अलावा एक बड़ी तादाद मिडिल-अपर क्लास उन हिंदू परिवारों के बच्चों की है, जिन्हें अब तक लगता था कि 'मोदी सरकार तो उनकी अपनी सरकार है'। यह युवा दमन के बाद अभी तक डटा है। यह दिन में लाठियां खाता है और शाम को रील और मीम बनाकर फिर चुनौती दे देता है। बीजेपी के आईटी सेल को भी समझ नहीं आ रहा कि इनका सामना कैसे करें। यह दिल्ली में पुलिस-आरएएफ के सामने खड़ा हो जाता है और कहता है -- मारो, और मारो सर। यह मुंबई में पुलिस वैन के आगे खड़ा होकर उसे रोक देता है। यह पटना में पुलिस से पूछता है दृ भाईसहाब टियर गैस की कोई व्यवस्था नहीं किए हैं। वाटर कैनन तो है3 और वाटर कैनन चलने पर उसमें नाचने लगता है। यह सीधे पुलिस को चुनौती दे देता है और कहता है कि आपने अपनी नेम प्लेट भी हटा दी, सरकार आपका नाम ही मिटा देगी, जैसे उसने ऑपरेशन सिंदूर में शहीद सैनिकों के नाम ही छुपा दिए। कह दिया, कोई नहीं मारा गया। यह युवा, यह बच्चे, ये लड़के, ये लड़कियां पुलिस की आंखों में आंखों डालकर पूछते हैं कि क्या आपके बच्चे नहीं है। क्या आप उनके साथ भी ऐसी ही बेरहमी से पेश आते। क्या उन्हें अच्छी शिक्षा नहीं चाहिए। 20 जुलाई के बाद के हालात देखकर लग रहा है कि इस आंदोलन को भले ही अभिजीत दीपके ने शुरू किया हो, लेकिन अब इसे किसी ठोस परिणाम तक पहुंचाए बिना खत्म कराना उनके बस की बात भी नहीं। आज भले ही दीपके या सौरव दास, आशुतोष रांका या यहां तक कि सोनम वांगचुक भी कहें कि चलो आश्वासन मिल गया, समझौता हो गया, आंदोलन खत्म, अब सब अपने घर जाएं, तब भी यह आंदोलन खत्म नहीं होगा। और अगर खत्म भी हो गया, तो फिर किसी न किसी तरह यहां नहीं, तो वहां उठ खड़ा होगा। तो यह आंदोलन कहां और कैसे खत्म होगा। उसके अब दो ही तरीके बचे हैं कि या तो शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान इस्तीफा दें या फिर सत्ता की मशीनरी, संघ-बीजेपी के लोग इसे अराजक बनाकर बदनाम कर दें और फिर मोदी-शाह की पुलिस प्रदर्शनकारियों पर सीधे गोली चलाए और एक बड़े खून-खराबे के बाद यह आंदोलन खत्म हो। पुराने औजार क्यों नहीं काम आ रहे जहां तक इसके विश्लेषण की बात है, तो इस आंदोलन का परंपरागत ढंग से इसलिए विश्लेषण नहीं किया जा सकता, क्योंकि तमाम समझदार लोग आज न चुनाव पढ़ पा रहे हैं, न आंदोलन, क्योंकि दोनों के तौर-तरीके बदल चुके हैं और हम पुराने औजार लेकर बैठे हैं। चुनाव विश्लेषण इसलिए भी फेल हो रहा है, क्योंकि चुनाव का परंपरागत तरीका बदल गया है। अब तो एसआईआर के बाद चुनाव, चुनाव बचा ही नहीं है। एक के बाद एक चुनाव खुले आम लूटा जा रहा है और अब तो विधायक-सांसद ही नहीं, पूरी पार्टी भी लुट रही हैं और बीजेपी के पेट में समा रही हैं। इसलिए जनमत या जनादेश या जमीन की हवा से इसे पढ़ना या भांपना, नतीजों का अनुमान लगाना मुश्किल हो रहा है। इसी तरह आंदोलन हो या और राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय संघर्ष या युद्ध किसी के बारे में दावे से कुछ नहीं कहा जा सकता। बहुत बौद्धिकों, अंतरराष्ट्रीय मामलों के जानकार, सैन्य विश्लेषक और पत्रकारों और यहां तक अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और उसके साथी इजरायल के नेतन्याहू को न केवल यकीन था, घमंड था, बल्कि बाकायदा इसकी घोषणा भी की गई थी कि ईरान को तीन घंटे या तीन दिन में खत्म कर देंगे। लेकिन ईरान आज पांच महीने बाद भी उसके सामने सीना तानकर खड़ा है। पूरी टॉप लीडरशिप खत्म होने के बाद भी। और ट्रंप साहब को भी समझ नहीं आ रहा कि इससे कैसे निकलें। आपको याद दिला दूं कि अमेरिका और इजरायल ने ईरान पर पहला बड़ा और बर्बर हमला 28 फरवरी, 2026 को किया था। इसी तरह के अनुमान, विश्लेषण और ऐलान रूस-यूक्रेन युद्ध को लेकर किए गए थे कि यह युद्ध भी सप्ताह भर भी नहीं चलेगा। लेकिन यह नहीं हुआ। भले ही नाटो की वजह से यूक्रेन आज भी खड़ा है, लेकिन इसे भी आज करीब साढ़े चार साल हो गए। फरवरी 2022 में यह जंग शुरू हुई थी। भारत में भी मोदी सरकार को शायद यही भ्रम था कि ये कॉकरोच जनता पार्टी सिर्फडिजिटल फिनोमिना है, जमीन पर इसका कोई असर नहीं है, और ये लोग दो-चार दिन धरना देकर चले जाएंगे। शुरुआत से अब तक कॉकरोच जनता पार्टी के नाम से यह आंदोलन पहली बार जंतर-मंतर पर 6 जून 2026 को शुरू हुआ और फिर 20 जून 2026 से लगातार जारी है। अब इसे एक महीने से ज्यादा हो गया है। जबकि पहले दिन से कॉकरोच जनता पार्टी और उसके संस्थापक अभिजीत दीपके शक और सवालों से घिरे रहे। अब 20 जुलाई के संसद मार्च के बाद भी सवाल कम नहीं हुए, बल्कि बढ़ गए। जैसे आंदोलनकारी युवाओं ने ही सवाल उठाया कि पूरे मार्च के दौरान दीपके कहां रहे। वो एक ट्रक में ही क्यों बैठे रहे। उन्होंने उनके साथ कोई लाठी क्यों नहीं खाई। ऐन कूच के दौरान प्रमुख प्रवक्ता सौरव दास और आशुतोष रांका क्यों स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा से मिलने चले गए। बातचीत होनी थी, तो 19 जुलाई की रात तक होनी थी, जब लोग संसद की तरफबढ़ना चाह रहे थे, उस समय बातचीत का कोई मतलब नहीं था। और बातचीत होती, तो सबके सामने होती या सबको विश्वास में लेकर होती। क्या इसके लिए आंदोलन में लगातार शामिल युवाओं या संगठनों से कोई सलाह-मशविरा किया गया। और इस बातचीत का परिणाम क्या निकला, सिर्फयही कि जब नेतृत्व की जरूरत थी, नेतृत्व गायब था। बाद में दीपके ने माना भी कि सरकार ने उन्हें अकेला करने के लिए यह साजिश रची। हालांकि हमें यह भी मानना चाहिए कि दीपके या उनकी टीम को आंदोलन का कोई पुराना अनुभव नहीं है। संभवतया यह उनका पहला आंदोलन होगा। और इस मामले में भी दीपके की तारीफकरनी होगी कि उन्होंने पहले दिन से बाबा साहेब आंबेडकर की तस्वीर थाम रखी है और हिंदू-मुस्लिम की राजनीति का खुलकर विरोध किया। यानी जो संघ-बीजेपी का कोर मुद्दा है, उस पर उन्होंने 6 जून के प्रदर्शन में ही सीधी चोट कर दी थी। और संघ-बीजेपी चाहकर भी अभी तक इस आंदोलन को हिंदू-मुसलमान का मुद्दा नहीं बना पाई है। एक और प्रमुख प्रवक्ता विजेता दहिया का हाल तो आप देख ही चुके हैं। उन्होंने जिस नाजुक वक्त में जैसा रवैया दिखाया, व्यवहार किया, उसके बाद उन्हें सीजेपी ने प्रवक्ता और सभी जिम्मेदारियों से हटा दिया है। इन तीन प्रवक्ताओं के अलावा चार अन्य प्रवक्ता भी बाद में सीजेपी में जोड़े गए, जिनमें तीन महिलाएं थी। क्योंकि पहले दिन से सवाल था कि सीजेपी के प्रमुख लोगों में महिलाएं क्यों नहीं हैं। लेकिन यह महिलाएं प्रवक्ता तो बनाई गईं, लेकिन इन्हें प्रमुख भूमिका नहीं दी गई। जबकि अगर यह कहें तो गलत न होगा कि पूरे आंदोलन को लड़कियों ने ही संभाला और संवारा है। जो आज भी लगातार लड़ती-जूझती दिखाई दे रही हैं। मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत की युवा-बेरोजगारों-एक्टिविस्ट को लेकर की गई एक शर्मनाक टिप्पणी कि ऐसे लोग- कॉकरोच और परजीवी हैं, मजाक-मजाक या व्यंग्य में यह पार्टी डिजिटल स्पेस यानी एक्स और इंस्टाग्राम पर शुरू हुई। जब 6 जून को जंतर-मंतर पर पहले धरने-प्रदर्शन की इजाजत मिली, तभी से इस पर तमाम सवाल उठ रहे हैं। और जैसे पहले कहा कि आज भी यह सवाल कम नहीं हुए हैं, लेकिन इसके बावजूद आंदोलन खड़ा हुआ है। यह बड़ी बात है। पहले विपक्ष ने भी उठाए सवाल दिलचस्प है कि पहले दिन से इस आंदोलन पर शक और सवाल उठाने में केवल सत्ता पक्ष नहीं, बल्कि विपक्ष भी शामिल था। इस मामले में दोनों सेम पेज पर थे। सत्ता पक्ष ने इसे विपक्ष की साजिश कहा और विपक्ष ने इसे सत्ता पक्ष की साजिश।

विद्या बालन की चर्चित फ्रैंचाइजी पर यामी गौतम ने मारा झपट्टा! कहानी 3 में आएंगी नजर? शूटिंग की तैयारी शुरू

चर्चित फ्रैं चाइजी की तीसरी कड़ी कहानी 3 में यामी गौतम की एंट्री की खबर है। फिल्म का निर्देशन सुजॉय घोष करेंगे। यामी गौतम के सितारे बुलंदी पर हैं। हाल ही में फि ल्म आर्टिकल 370 में शानदार अदाकारी के लिए यामी गौतम के नाम का एलान नेशनल फिल्म अवॉर्ड के लिए हुआ। उन्होंने 2024 में आई इस फि ल्म के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीता। इस बीच अभिनेत्री के फैंस के लिए एक और खुशखबरी है। यामी गौतम फिल्म कहानी 3 में नजर आएंगी। सुजॉय घोष की चर्चित फ्रैंजाइजी की दो फिल्में आ चुकी हैं। पहली फिल्म कहानी साल 2012 में रिलीज हुई थी। वहीं, दूसरा पार्ट 2016 में रिलीज हुआ। दोनों फिल्मों के निर्देशन का जिम्मा सुजॉय घोष ने निभाया। वहीं, लीड रोल में विद्या बालन नजर आई थीं। अब सुजॉय इसकी तीसरी किस्त लेकर आ रहे हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक, श्कहानी 3श् में यामी गौतम की एंट्री हो गई है। खबरों के मुताबिक अभिनेत्री यामी गौतम श्कहानी 3श् में मुख्य भूमिका निभाएंगी। वहीं, सुजॉय घोष एक बार फिर डायरेक्टर के तौर पर वापसी करेंगे। यह फिल्म इस फ्रैंचाइजी की दुनिया में एक नई कहानी दिखाएगी। कहा जा रहा है कि टीम इसकी शूटिंग के शेड्यूल की तैयारी कर रही है। फिलहाल प्रोजेक्ट अभी प्री-प्रोडक्शन स्टेज में है। टीम फिल्म के दूसरे पहलुओं पर काम कर रही है। पिंकविला की रिपोर्ट के मुताबिक, पहली दो फिल्मों में विद्या बालन लीड रोल में थीं, लेकिन कहानी 3 इस फ्रैं चाइजी को एक नई दिशा में ले जाएगी। कहा जा रहा है कि यह फिल्म पिछली फिल्मों की कहानी को आगे नहीं बढ़ाएगी, बल्कि कहानी की दुनिया पर आधारित एक नई कहानी होगी। मेकर्स अभी शूटिंग की टाइमलाइन पर काम कर रहे हैं और उम्मीद है कि जल्द ही शेड्यूल तय कर लेंगे। यामी को आखिरी बार उनके पति निर्देशक आदित्य धर के निर्देशन में बनी फिल्म श्धुरंधर- द रिवेंज (2026) में एक कैमियो रोल में देखा गया था।

>>> बॉलीवुड <<<

ईवा ग्रोवर के शॉकिंग खुलासेः आमिर खान के भाई हैदर अली ने बिजली बिल भरने के लिए दूसरों के संग सोने को कहा

इस समय टीवी एक्ट्रेस ईवा ग्रोवर चौंकाने वाला खुलासा किया है। दरअसल, उन्होंने अपने एक्स-हसबैंड हैदर अली खान के बार में खुलकर बात रखी है। आपको बता दें कि, हैदर, आमिर के सौतेले भाई हैं। एक्ट्रेस में बताया है कि हैदर उन पर डायरेक्टर्स के साथ इंटिमेट होने का दबाव डालते थे। आपको याद होगा टीवी सीरियल करिश्मा का करिश्मा इसमें एक्ट्रेस नजर आ चुकी हैं। इसी के साथ ईवा रेडी मूवी में काम कर चुकी हैं। इस दौरान ईवा ने अपनी मुश्किल शादीशुदा जिंदगी के बारे में खुलकर बात रखी है। हालिए में सिद्धार्थ कन्नन के साथ उनकी बातचीत हुई है। जब उनसे पूछा गया कि क्या हैदर चाहते थे कि वह दूसरों के साथ श्फिजिकली इंटिमेट हों। इस पर एक्ट्रेस ने कहा, उन्होंने ऐसी बात रखी थी, मुझ पर बहुत दबाव डाला था। इसके बाद एक्ट्रेस से पूछा गया है कि क्या हैदर ने उन्हें डायरेक्टर्स और प्रोड्यूसर्स के साथ सोने के लिए मजबूर किया था, जिससे उन्हें काम मिल सके। बातचीत में ईवा ने बताया कि श्काम तो मेरे पास हमेशा था। लेकिन जो फेज जिसमें मैंने काम छोड़ दिया था, मेरे सारे एफडी तोड़ दिए थे मैंने, गाड़ियां बेच दी थी उसके परिवार के लिए, सब कर लिया था जब मैंने दूसरी बार इनको संभाला था। तो उनकी तरफ से ये ऑफर आया था। टीवी एक्ट्रेस ईवा ने आगे बताया कि, क्या फर्क पड़ता है? क्योंकि हमको प्रपोजल आते थे ना, एक्ट्रेसेस को तो तो आते ही हैं। बड़े-बड़े प्रपोजल आते हैं। मेरे अपने पति ने कहा था, क्या फर्क पड़ता है? करो। करना पड़ेगा। आपको घर चलाना है, हमारा बिजली बिल इतना हो गया है... बच्चे के लिए पैसा चाहिए। वह सब कुछ का अंत था। उसके बाद मैंने कभी मुड़कर नहीं देखा। इस बातचीत में एक्ट्रेस ने खुलासा किया है कि हैदर को सिजोफ्रेनिया है,लेकिन जब उनकी शादी हुई तो वह उसकी स्थिति को समझ नहीं पाई क्योंकि वह उसे बमुश्किल जानती थी। उन्होंने खुलासा किया कि उसकी शादी जल्द ही हिंसक हो गई है और उसके शरीर पर चोट के निशान देखने बाद के उसका परिवार उसके लिए चिंतित होगा। उन्होंने यह भी कहा कि खुलासा किया कि हैदर आज अच्छी जिंदगी नहीं जा रही है। शहनाज की पहली शादी से बेटा हैदर हुआ है। शहनाज ने सुपरस्टार आमिर खान के दिवंगत फिल्ममेकर पिता ताहिर हुसैन से शादी की, इसलिए वह आमिर खान के सौतेले भाई हैं। एक्टर बनने से पहले हैदर ने केबिन क्रू मेंबर के तौर पर कार्य किया है। मीडिया रिपोर्ट्स और ईवा के अनुसार, वह आमिर खान के परिवार के बिल्कुल करीब नहीं है।

बिहार के सरकारी स्कूलों में अब भोजपुरी, मगही, मैथिली और अंगिका में भी होगी पढ़ाई

उमा सक्सेना

पटनाः बिहार सरकार ने प्राथमिक शिक्षा को मातृभाषा से जोड़ने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। राज्य के शिक्षा मंत्री मिथिलेश तिवारी ने निर्देश दिया है कि अब सरकारी स्कूलों में कक्षा 1 से 5 तक के छात्रों को हिंदी के साथ-साथ स्थानीय

क्षेत्रीय भाषाओं-भोजपुरी, मगही, मैथिली और अंगिका-में भी पढ़ाया जाएगा। यह निर्देश शिक्षा मंत्री ने राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के अधिकारियों के साथ हुई समीक्षा बैठक के दौरान दिया। उन्होंने कहा कि मातृभाषा में पढ़ाई होने से बच्चे विषयों को बेहतर ढंग से समझ पाएंगे और उनकी सीखने की क्षमता में सुधार होगा।

मातृभाषा में शिक्षा से बढ़ेगी समझः शिक्षा मंत्री मिथिलेश तिवारी ने कहा कि क्षेत्रीय भाषा बच्चे की पहली भाषा होती है। जब छात्र अपनी मातृभाषा में पढ़ाई करेंगे तो उनकी विषयों में रुचि बढ़ेगी, अवधारणाएं बेहतर तरीके से समझ आएंगी और वे लंबे समय तक उन्हें याद रख सकेंगे। उन्होंने कहा कि यह पहल विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों के लिए लाभदायक साबित होगी, जहां बड़ी संख्या में बच्चे अपनी स्थानीय भाषा में संवाद करते हैं।

SCERT को मिली अहम जिम्मेदारीः सरकार ने इस नई व्यवस्था को लागू करने की जिम्मेदारी रउएफ्ळ को सौंपी है। परिषद जल्द ही क्षेत्रीय भाषाओं में पाठ्यक्रम तैयार करने, पाठ्यपुस्तकों के विकास और शिक्षकों के प्रशिक्षण की प्रक्रिया शुरू करेगी। इसके अलावा, SCERT में लंबे समय से खाली पड़े पदों को भरने की प्रक्रिया भी तेज की जाएगी। रिक्त पदों की पहचान कर बिहार लोक सेवा आयोग को अधियाचना भेजी जाएगी, जिसके बाद आयोग इन पदों पर भर्ती करेगा।

शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने पर जोरः शिक्षा विभाग का मानना है कि क्षेत्रीय भाषाओं को शिक्षा व्यवस्था में शामिल करने से पढ़ाई की गुणवत्ता बेहतर होगी और छात्रों के स्कूल छोड़ने (ड्रॉपआउट) की दर में भी कमी आएगी। साथ ही यह निर्णय बिहार की भाषाई और सांस्कृतिक विरासत को भी मजबूत करेगा। सरकार जल्द ही इस नई व्यवस्था को लागू करने के लिए विस्तृत कार्ययोजना और समयसीमा जारी करेगी। इसे बिहार में बहुभाषी शिक्षा नीति की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल माना जा रहा है।

'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' ने पूरे किए 18 साल

उमा सक्सेना

मुंबईः भारतीय टेलीविजन के सबसे लोकप्रिय और लंबे समय तक चलने वाले कॉमेडी शोज में शामिल 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' ने अपने सफल प्रसारण के 18 साल पूरे कर लिए हैं। 28 जुलाई 2008 को शुरू हुए इस शो ने लाखों दर्शकों के दिलों में अपनी खास जगह बनाई है। शो के 18वें स्थापना दिवस के मौके पर निर्माता असित कुमार मोदी ने एक भव्य समारोह का आयोजन किया। इस अवसर को पूरी टीम ने 'हंसो और हंसाओ दिवस' के रूप में मनाया और शो की शानदार यात्रा का जश्न मनाया।

'जेठालाल' और 'बबीता जी' रहे आकर्षण का केंद्रः सेलिब्रेशन के दौरान शो के लोकप्रिय किरदार 'जेठालाल' (दिलीप जोशी) और 'बबीता जी' (मुनमुन दत्ता) ने सबसे ज्यादा सुर्खियां बटोरीं। दोनों कलाकारों ने पूरी स्टारकास्ट के साथ केक काटा, जश्न मनाया और मीडिया से बातचीत में शो से जुड़ी कई यादें साझा कीं। कलाकारों ने दर्शकों के प्यार और समर्थन के लिए आभार जताते हुए कहा कि यही स्नेह शो की सबसे बड़ी ताकत रहा है, जिसने इसे 18 वर्षों तक लगातार लोकप्रिय बनाए रखा।

18 वर्षों से दर्शकों का पसंदीदा शोः 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' भारतीय टेलीविजन का सबसे लंबे समय तक प्रसारित होने वाले कॉमेडी शोज में से एक है। परिवार, सामाजिक संदेश और हल्के-फुल्के हास्य के मेल ने इस शो को हर उम्र के दर्शकों के बीच लोकप्रिय बनाया है। 18 साल पूरे होने के इस खास मौके पर शो की पूरी टीम ने दर्शकों का धन्यवाद किया और आने वाले समय में भी इसी तरह मनोरंजन जारी रखने का भरोसा जताया।

'लाफ्टर शेफ्स 3' के विनर बने अली गोनी और जन्नत जुबैर

उमा सक्सेना

मुंबईः टीवी के लोकप्रिय कुकिंग और एंटरटेनमेंट रियलिटी शो 'लाफ्टर शेफ्स' सीजन 3 को आखिरकार अपना विजेता मिल गया है। कई हफ्तों तक चले रोमांचक कुकिंग चैलेंज, मस्ती और मनोरंजन के बाद अली गोनी और जन्नत जुबैर की जोड़ी ने इस सीजन की ट्रॉफी अपने नाम कर ली। ग्रैंड फिनाले में दोनों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए बाकी फाइनलिस्ट जोड़ियों को पीछे छोड़ दिया। 26 जुलाई को प्रसारित हुए ग्रैंड फिनाले में फिल्म निर्माता रोहित शेट्टी विशेष अतिथि के रूप में पहुंचे। उनके साथ 'खतरों के खिलाड़ी' के कंटेस्टेंट हर्ष गुजराल, फरहाना भट और अन्य मेहमानों ने भी फाइनलिस्ट की अंतिम डिश तैयार करने में सहयोग किया। फाइनल मुकाबले में करण कुंद्रा और एल्विश यादव की जोड़ी, साथ ही अर्जुन बिजलानी और तेजस्वी प्रकाश की टीम ने अली और जन्नत को कड़ी टक्कर दी। हालांकि, निर्णायक राउंड में अली गोनी और जन्नत जुबैर ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए जीत हासिल की। शो के जज शेफ हरपाल सिंह सोखी ने उन्हें 'लाफ्टर शेफ्स' सीजन 3 का विजेता घोषित किया।

जीत के बाद जन्नत जुबैर का इमोशनल पोस्टः ट्रॉफी जीतने के बाद जन्नत जुबैर ने अली गोनी के साथ अपनी तस्वीरें इंस्टाग्राम पर साझा कीं। पोस्ट में उन्होंने अपनी खुशी जाहिर करते हुए लिखा कि इस सफर ने उन्हें एक बेहतरीन दोस्त दिया। अली गोनी और जन्नत जुबैर की जीत के बाद सोशल मीडिया पर दोनों को लगातार बधाइयां मिल रही हैं। फैंस उनकी शानदार बॉन्डिंग और पूरे सीजन के प्रदर्शन की जमकर तारीफ कर रहे हैं। दोनों की ट्रॉफी के साथ तस्वीरें भी सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रही हैं। 'लाफ्टर शेफ्स' सीजन 3 ने अपने अनोखे कॉन्सेप्ट, कुकिंग टास्क और सेलिब्रिटी कंटेस्टेंट्स की मस्ती के दम पर दर्शकों का भरपूर मनोरंजन किया। अब विजेता बनने के बाद अली गोनी और जन्नत जुबैर की जोड़ी चर्चा का केंद्र बनी हुई है।

योगी सरकार का बड़ा शिक्षा अभियानः पढ़ाई में पीछे छूटे बच्चों के लिए शुरू होगा 'कैच-अप शिक्षण अभियान'

उमा सक्सेना

लखनऊः उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार बुनियादी शिक्षा को मजबूत बनाने और पढ़ाई में पीछे रह गए बच्चों को मुख्यधारा से जोड़ने के लिए 'कैच-अप शिक्षण अभियान'को नई गति देने जा रही है। इस अभियान के तहत राज्य के सभी सरकारी विद्यालयों, ब्लॉक संसाधन केंद्र, बेसिक शिक्षा अधिकारी कार्यालयों और जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में 31 जुलाई तक सूचना, शिक्षा एवं संचार सामग्री प्रदर्शित की जाएगी। महानिदेशक स्कूल शिक्षा मोनिका रानी ने सभी संबंधित अधिकारियों को अभियान का समयबद्ध और प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। सरकार का उद्देश्य ऐसे विद्यार्थियों की पहचान करना है जो अपने कक्षा स्तर के अनुसार सीखने में पीछे हैं और उन्हें विशेष शिक्षण के माध्यम से आवश्यक अधिगम स्तर तक पहुंचाना है।

15 सूत्रीय रणनीति से सुधरेगी शिक्षा व्यवस्थाः कैच-अप शिक्षण अभियान को सफल बनाने के लिए शिक्षा विभाग ने 15 सूत्रीय रणनीति तैयार की है। इसके तहत सबसे पहले उन बच्चों की पहचान की जाएगी जिनका अधिगम स्तर अपेक्षित मानकों से कम है। इसके बाद विद्यार्थियों को उनके सीखने के स्तर के अनुसार समूहों में विभाजित कर विशेष शिक्षण दिया जाएगा। रणनीति में गतिविधि आधारित शिक्षण, शिक्षण-अधिगम सामग्री का प्रभावी उपयोग, नियमित अभ्यास, सतत मूल्यांकन और छात्रों की प्रगति की लगातार निगरानी पर विशेष जोर दिया गया है। साथ ही अभिभावकों की भागीदारी भी अभियान का महत्वपूर्ण हिस्सा होगी।

'निपुण लक्ष्य' के तहत तय होंगे सीखने के मानकः सरकार के 'निपुण लक्ष्य' कार्यक्रम के तहत बालवाटिका से कक्षा 5 तक भाषा, गणित, पर्यावरण अध्ययन और अंग्रेजी विषयों के स्पष्ट अधिगम मानक निर्धारित किए गए हैं। इन मानकों के आधार पर शिक्षकों को बच्चों की सीखने की प्रगति का आकलन करने में सुविधा होगी। स्कूलों में लगाए जाने वाले पोस्टरों और IEC सामग्री के माध्यम से प्रत्येक कक्षा के लिए निर्धारित अधिगम स्तर की जानकारी भी दी जाएगी, जिससे शिक्षक और अभिभावक दोनों बच्चों की प्रगति को बेहतर ढंग से समझ सकेंगे।

रीडिंग कैंपेन को मिलेगा बढ़ावाः अभियान के तहत रीडिंग कैंपेन को भी विशेष रूप से प्रोत्साहित किया जाएगा। इसके अंतर्गत स्कूलों में रीडिंग कॉर्नर, कहानी वाचन, पुस्तक चर्चा और पढ़ने की आदत विकसित करने वाली गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा। सरकार का मानना है कि पढ़ने की मजबूत क्षमता बच्चों के समग्र शैक्षणिक विकास का आधार है।

क्या है IEC सामग्री?: IEC (Information, Education and Communication) सामग्री का उद्देश्य छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों तक शिक्षा से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी प्रभावी तरीके से पहुंचाना है। पोस्टर, चार्ट, फ्लेक्स और अन्य शैक्षणिक सामग्री के माध्यम से बच्चों को सीखने के लिए प्रेरित किया जाएगा और शिक्षकों को प्रभावी कक्षा शिक्षण की दिशा मिलेगी।

पूरे प्रदेश में एक जैसी शैक्षणिक कार्य संस्कृति विकसित करने का लक्ष्यः राज्य सरकार का कहना है कि कैच-अप शिक्षण अभियान से पूरे उत्तर प्रदेश में एक समान शैक्षणिक कार्य संस्कृति विकसित होगी। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि कोई भी बच्चा सीखने में पीछे न रह जाए और प्रत्येक छात्र अपनी कक्षा के अनुरूप अधिगम स्तर हासिल कर सके। सरकार को उम्मीद है कि यह अभियान न केवल शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करेगा, बल्कि विद्यार्थियों के आत्मविश्वास और सीखने की क्षमता को भी मजबूत बनाएगा।

पाकिस्तान आर्मी पर अंधा भरोसा न करे अमेरिका

विशेषज्ञ ने हाइब्रिड सिस्टम पर दी बड़ी चेतावनी

(एजेंसी)

एक नई रिपोर्ट में, पाकिस्तान में कमजोर होते लोकतंत्र और सेना के बढ़ते असर को लेकर अमेरिका से बड़ा कदम उठाने की अपील की गई है। रिपोर्ट के मुताबिक, अमेरिका को पाकिस्तान के सेना प्रमुख फील्ड मार्शल आसिम मुनीर को मिल रहे समर्थन पर फिर से विचार करना चाहिए। इसमें कहा गया है कि पाकिस्तान की असल ताकत चुनी हुई सरकार के बजाय सेना के प्रभाव वाली हाइब्रिड राजनीतिक व्यवस्था के हाथ में है, जिससे लोकतांत्रिक सिस्टम पूरी तरह कमजोर पड़ रहा है।

2024 के चुनावों के बाद गहराया संवैधानिक संकट

टाइम्स ऑफ इजरायल में राजनीतिक शोधकर्ता वास शेनाय के छपे एक लेख के अनुसार, 2024 के आम चुनावों के बाद से पाकिस्तान भारी कानूनी और राजनीतिक संकट से गुजर रहा है। पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की गिरफ्तारी के बाद मीडिया पर पाबंदियां बढ़ा दी गईं, अदालतों की आजादी पर असर पड़ा और अल्पसंख्यकों के खिलाफ हिंसा के मामले भी बढ़े हैं। इस वजह से आम लोगों का लोकतंत्र और चुनावों से भरोसा उठता जा रहा है।

चरमपंथ, आतंकवाद और सुरक्षा की गंभीर चुनौतियां

लेख में पाकिस्तान की सुरक्षा व्यवस्था पर गहरी चिंता जताई गई है। खैबर पख्तूनख्वा में तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान की गतिविधियां तेज हुई हैं, वहीं बलूच अलगाववादी और इस्लामिक स्टेट-खोरासान जैसे आतंकी गुट भी लगातार सक्रिय हैं। रिपोर्ट में आरोप लगाया गया है कि आतंकवादी संगठनों को लेकर पाकिस्तान की दोहरी नीति ने उसकी सुरक्षा चुनौतियों को और भी ज्यादा खतरनाक बना दिया है।

आर्थिक तंगी, कर्ज और बढ़ती गरीबी का बोझ

आर्थिक मोर्चे पर रिपोर्ट कहती है कि अंतरराष्ट्रीय मदद से पाकिस्तान का तुरंत डूबने का खतरा भले ही टल गया हो, लेकिन वह अब भी भारी कर्ज, ऊर्जा संकट और विदेशी फंड्स पर निर्भर है। तेजी से बढ़ती आबादी, गरीबी और जलवायु परिवर्तन जैसी परेशानियां देश की अर्थव्यवस्था को और ज्यादा कमजोर बना रही हैं।

अमेरिका को सुझाव

विशेषज्ञ ने सलाह दी है कि अमेरिका को पाकिस्तान को आर्थिक और क्लाइमेट चेंज से जुड़ी मदद देनी चाहिए, लेकिन इसके साथ ही कुछ सख्त शर्तें भी लगानी चाहिए।

को मजबूत किया जाए। सभी आतंकी संगठनों के खिलाफ बिना किसी भेदभाव के कड़ी कार्रवाई हो। लेख में साफ कहा गया है कि वॉशिंगटन को पहले की तरह पाकिस्तानी सैन्य नेतृत्व को आंख मूंदकर समर्थन देने से बचना चाहिए।

परमाणु हथियारों की सुरक्षा

रिपोर्ट में पाकिस्तान के परमाणु हथियारों का भी जिक्र किया गया है। फिलहाल उसके न्यूक्लियर हथियार एक सुरक्षित श्कमांड एंड कंट्रोलश् सिस्टम के तहत हैं और किसी आतंकी गुट के हाथ लगने की गुंजाइश कम है। हालांकि, अंदरूनी मिलीभगत, परमाणु सामग्री की चोरी, रास्ते में हमला या सेना के अंदर किसी संभावित टूट जैसे बड़े खतरों को बिल्कुल भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

एससीओ में ईरान के एफएम अराघची का वाशिंगटन को दो टूक: यूएस दादागिरी नहीं सहेंगे

(एजेंसी)

ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अरागची ने फिर से कहा कि तेहरान अमेरिकी दबाव या धमकी के आगे नहीं झुकेगा और देश किसी भी तरह के जबरदस्ती या बल-प्रयोग को स्वीकार नहीं करेगा। प्रेस टीवी की एक रिपोर्ट के अनुसार, किर्गिस्तान के चोलपोन-अता में शंघाई सहयोग संगठन के विदेश मंत्रियों की परिषद की बैठक के बाद पत्रकारों से बात करते हुए अरागची ने राजनयिक माध्यमों से जुड़ी चर्चाओं पर बात की। बैठक के दौरान हुई द्विपक्षीय बातचीत के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि तेहरान और वाशिंगटन के बीच मुख्य बाधा बातचीत के रास्तों की कमी नहीं है, बल्कि अमेरिका का धौंस जमाने और जबरदस्ती करने पर लगातार निर्भर रहना है। अरागची ने जोर देकर कहा कि ईरान ने दिखा दिया है कि वह अमेरिका की धौंस के आगे नहीं झुकेगा और किसी भी हाल में बल, दबाव और धमकियों

की भाषा का जवाब नहीं देगा। उन्होंने कहा कि अलग-अलग प्रस्तावों पर पाकिस्तान के साथ बातचीत करना एक स्वाभाविक कदम है, क्योंकि पाकिस्तान इसमें मध्यस्थ की भूमिका निभाता है। तेहरान का मुख्य रुख बताते हुए अरागची ने कहा कि ईरानी लोगों की सुरक्षा और होर्मुज जलडमरूमध्य में ईरान के हितों की रक्षा करना हमारे सिद्धांतों में शामिल है। उन्होंने कहा कि जब तक ईरानी लोगों के जायज मकसद और मांगें पूरी नहीं हो जातीं, हम स्वाभाविक रूप से अपने रास्ते पर आगे बढ़ते रहेंगे। उन्होंने आगे कहा, हम धमकियों से डरते नहीं हैं, न ही दबाव में झुकेंगे, और हम धमकी भरी भाषा बर्दाश्त नहीं करते। अरागची ने कहा कि ईरान की सेनाएं मोर्चे पर और उसके राजनयिक अंतरराष्ट्रीय मंच पर देश की सेवा में एक-दूसरे के पूरक की भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंनें ब्व् (जिसे उन्होंने एक प्रगतिशील संगठन बताया) के सदस्य देशों से आग्रह किया कि वे वाशिंगटन और उन पश्चिमी संस्थाओं के एकतरफा एजेंडे का मुकाबला करें जो अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर हावी होना चाहती हैं।

ईरान-अमेरिका के बीच मध्यस्थता कराने की कोशिश कर रहा पाकिस्तान बुरा फँसा, आसिम मुनीर की सीक्रेट डील के खुलासे से चारों ओर हड़कंप

(एजेंसी)

पश्चिम एशिया में लगभग पाँच महीने से भड़की ईरान-अमेरिका जंग अब वैश्विक ऊर्जा, समुद्री व्यापार और महाशक्तियों की प्रतिष्ठा की निर्णायक लड़ाई बन चुकी है। इसी बीच पाकिस्तान एक बार फिर स्वयं को मध्यस्थ के रूप में स्थापित करने की कोशिश कर रहा है, लेकिन उसका यह नया दांव शुरू से ही कमजोर दिखाई देता है। पहले भी अनेक कूटनीतिक मोर्चों पर संतुलन साधने में विफल रहा इस्लामाबाद अब चीन के इशारे पर ईरान और अमेरिका के बीच रुकी हुई वार्ता को पुनर्जीवित करने की कवायद कर रहा है। ईरान के गृह मंत्री इस्कंदर मोमेनी की हालिया पाकिस्तान यात्राएं और शीर्ष नेतृत्व के साथ हुई बैठकों ने इस प्रयास को गति तो दी है, लेकिन जमीनी हालात इसके बिल्कुल विपरीत हैं। एक ओर ईरान समर्थित हूती संगठन सऊदी अरब के खिलाफ मोर्चा खोल चुका है, दूसरी ओर अमेरिका लगातार सैन्य दबाव बढ़ा रहा है। ऐसे में सऊदी अरब, चीन, ईरान और अमेरिका, चारों के परस्पर विरोधी हितों के बीच फंसा पाकिस्तान किसी भी पक्ष का भरोसा पूरी तरह नहीं जीत पा रहा। पाकिस्तान भले मध्यस्थता का प्रयास कर रहा है, लेकिन संघर्ष की लगातार बढ़ती तीव्रता, समुद्री नाकाबंदी और क्षेत्रीय ध्रुवीकरण को देखते हुए यह पहल सफल होने की संभावना बेहद क्षीण दिखाई देती है। दिलचस्प बात यह भी है कि पाकिस्तान की यह नई कूटनीतिक सक्रियता ऐसे समय सामने आई है, जब उसके सेना प्रमुख फील्ड मार्शल आसिम मुनीर को लेकर एक और बड़ा दावा चर्चा में बना हुआ है। हम आपको बता दें कि एक अंतरराष्ट्रीय समाचार रिपोर्ट के अनुसार, मुनीर ने इसी वर्ष मार्च में सऊदी अरब और ईरान के बीच एक कथित गुप्त युद्धविराम समझौता कराने में भूमिका निभाई थी। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि यह समझौता ईरानी तेल के अनौपचारिक निर्यात को सुगम बनाए रखने के बदले कराया गया, जिसमें ईरान के रिवोल्यूशनरी गार्ड से जुड़े शीर्ष अधिकारियों और पाकिस्तानी सैन्य प्रतिष्ठान से जुड़े लोगों के आर्थिक हित भी जुड़े बताए गए हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, इस कथित समझौते के बाद कई महीनों तक सऊदी अरब पर ईरानी हमले लगभग थम गए थे, लेकिन हाल में फिर मिसाइल हमला होने के बाद मुनीर ने कथित तौर पर तेहरान को अपने साझा तेल कारोबार पर असर पड़ने की चेतावनी दी, जिसके बाद हमले रुक गए। हालांकि इन दावों की स्वतंत्र पुष्टि नहीं हुई है और संबंधित पक्षों ने सार्वजनिक रूप से इन्हें स्वीकार भी नहीं किया है, लेकिन यदि इन रिपोर्टों में दम है तो यह संकेत मिलता है कि पाकिस्तान की मध्यस्थता केवल शांति स्थापना तक सीमित नहीं, बल्कि उसके पीछे सामरिक, आर्थिक और ऊर्जा हितों का जटिल ताना-बाना भी मौजूद है। यही कारण है कि इस्लामाबाद की मौजूदा कूटनीतिक पहल को कई विश्लेषक निष्पक्ष शांति प्रयास की बजाय क्षेत्रीय शक्ति संतुलन और अपने रणनीतिक हितों को साधने की कोशिश के रूप में भी देख रहे हैं। वैसे हम आपको बता दें कि पाकिस्तान की कूटनीतिक कवायद बेहद कठिन संतुलन की मांग करती है। एक ओर वह सऊदी अरब की आर्थिक सहायता पर निर्भर है, वहीं दूसरी ओर चीन उसका सबसे बड़ा रणनीतिक और आर्थिक साझेदार है। उधर, ईरान समर्थित हूती विद्रोहियों ने सऊदी अरब के विरुद्ध नौसैनिक नाकाबंदी की घोषणा कर दी है और तेल टैंकरों को निशाना बनाकर पूरे क्षेत्र में तनाव कई गुना बढ़ा दिया है। ऐसे में पाकिस्तान यदि ईरान के अधिक निकट दिखाई देता है तो सऊदी अरब नाराज हो सकता है, जबकि चीन चाहता है कि किसी भी कीमत पर क्षेत्र में शांति स्थापित हो ताकि उसके व्यापारिक और ऊर्जा हित सुरक्षित रह सकें। हम आपको बता दें कि चीन की सबसे बड़ी चिंता ऊर्जा आपूर्ति और समुद्री व्यापार है।

स्पेन में आग का संकट: 70 हजार लोगों ने छोड़ा घर

मैड्रिड में धुएं का गुबार, प्रशासन ने जारी किया इमरजेंसी अलर्ट

(एजेंसी)

स्पेन के प्रधानमंत्री पेड्रो सांचेज ने शनिवार को बताया कि मैड्रिड के पश्चिमी इलाके में लगी भीषण आग पर काबू पाने और लोगों की जान बचाने के लिए दमकलकर्मी लगातार कोशिश कर रहे हैं। तेज हवाएं चलने की आशंका ने इस राहत और बचाव काम को और भी ज्यादा कठिन बना दिया है।

70 हजार लोगों को छोड़ना पड़ा अपना घर

सरकारी जानकारी के मुताबिक, सूखे इलाकों में फैली इस आग की वजह से करीब 70,000 लोगों को अपना घर छोड़कर सुरक्षित जगहों पर जाना पड़ा है। स्थानीय अधिकारियों ने इसे इस पूरे इलाके के इतिहास की अब तक की सबसे भयानक और विनाशकारी आग करार दिया है। आने वाले कुछ घंटे हो सकते

हैं बेहद मुश्किल

प्रभावित इलाके सेनिसीएंटोस गांव पहुंचे पीएम सांचेज ने कहा, हमारी सबसे पहली प्राथमिकता और मकसद लोगों की जान बचाना और रिहाइशी इलाकों की सुरक्षा करना है। उन्होंने आगे सावधान करते हुए कहा, आने वाले कुछ घंटे काफी मुश्किल भरे हो सकते हैं। भले ही तापमान थोड़ा कम हुआ है, लेकिन हवा की रफ्तार और उसकी दिशा को लेकर अभी कुछ कहा नहीं जा सकता।

हर तरफतबाही का मंजर

ब्रुनेट शहर की मेयर मार निकोलस ने हालात पर चिंता जताते हुए कहा, इस इलाके में हर साल आग की घटनाएं होती हैं, लेकिन इस बार का रूप बेहद खौफनाक है। यह एक बहुत बड़ी तबाही है।

मैड्रिड की सड़कों तक फैला धुआं

आग का धुआं इतना भयानक है कि पूरी राजधानी के पश्चिमी हिस्से का आसमान धुएं से भर गया। सुबह-सुबह सेंट्रल मैड्रिड की सड़कों तक जलने की बदबू पहुंचने लगी, जिससे लोगों को गले में खराश की परेशानी होने लगी और उन्हें खिड़कियां बंद करनी पड़ीं। स्वास्थ्य मंत्रालय ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर अलर्ट जारी कर लोगों को बाहर न निकलने की सलाह दी है।

शेल्टर होम में कटे दिन, लोगों में दहशत का माहौल

आसपास के गांवों से निकाले गए हजारों लोगों को स्पोर्ट्स हॉल में बनाए गए अस्थाई शेल्टर होम में ठहराया गया है। पेरू की रहने वाली 38 साल की जैकलीन विलाफ्रांका ने अपना दर्द बयां करते हुए कहा कि जब फोन पर आग का इमरजेंसी अलर्ट बजा, तो उन्हें लगा कि उनका घर और सब कुछ जलकर राख हो जाएगा।

टैक्स रिफॉर्म की दिशा में 5 प्राथमिकताओं पर जोर

टेक-ड्रिवन बनेगा नया इनकम टैक्स सिस्टम

(एजेंसी)

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शुक्रवार को आयकर विभाग के अधिकारियों से ईमानदार करदाताओं के लिए प्रक्रिया को आसान बनाने और जानबूझकर कर चोरी करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने को कहा। इसके साथ ही सीतारमण ने उत्तरदायी कर प्रशासन के लिए पहचान, प्रतिक्रिया, निवारण, समीक्षा और सुधार रूपी पांच प्राथमिकताओं पर विशेष जोर दिया। वित्त मंत्री ने 167वें आयकर दिवस पर आयोजित एक कार्यक्रम में कहा कि विभाग की भूमिका अब केवल कर संग्रह तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसमें पारदर्शिता, दक्षता, व्यापार सुगमता और सेवा भाव भी शामिल हो गया है। उन्होंने कहा डेढ़ सदी से अधिक समय में आयकर विभाग भारत के आर्थिक रूपांतरण के साथ विकसित हुआ है और देश की बदलती जरूरतों के अनुरूप खुद को लगातार ढालता रहा है। सीतारमण ने कहा कि आयकर अधिनियम, 2025 के लागू होने से कानून को सरल बनाया गया है, अनिश्चितता कम हुई है और अनुपालन लागत घटी है। साथ ही, ई-फाइलिंग पोर्टल की क्षमता बढ़ने से इस बार आयकर रिटर्न (आईटीआर) दाखिल करने की प्रक्रिया और मजबूत हुई है। उन्होंने बताया कि एक दिन में एक करोड़ से अधिक करदाताओं को संभाला गया जबकि व्यस्त समय में यह संख्या 1.6 करोड़ तक पहुंच गई। आईटीआर दाखिल करने के मौजूदा सत्र में 21 जुलाई तक 3.2 करोड़ से अधिक रिटर्न दाखिल किए जा चुके हैं, जिनमें से करीब 94 प्रतिशत का सत्यापन और 60 प्रतिशत का निपटान किया जा चुका है। इसके अलावा 1.3 करोड़ से अधिक कर रिफंड दावे किए गए, जिनमें 96 प्रतिशत को सत्यापित और 40 प्रतिशत को निपटाया जा चुका है। सीतारमण ने कहा कि रिफंड प्रक्रिया में तेजी लाने से करदाताओं का भरोसा बढ़ता है और उनकी नकदी स्थिति मजबूत होती है। उन्होंने कहा, हमारा दृष्टिकोण ऐसा होना चाहिए जिसमें ईमानदार करदाताओं को सुविधा मिले, वास्तविक त्रुटियों को सुधारने का अवसर दिया जाए और जानबूझकर कर चोरी करने वालों पर कड़ी कार्रवाई हो। वित्त मंत्री ने आयकर अधिकारियों से कहा कि कर कानून द्वारा प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग हमेशा विनम्रता के साथ किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि करदाता केवल कर आकलन का विषय न होकर देश का नागरिक और देश के विकास का साझेदार भी है। उन्होंने कर विवादों को कम करने और कर निश्चितता बढ़ाने पर भी जोर दिया। कर निश्चितता स्वैच्छिक अनुपालन की मजबूत नींव है। हमें 'विवाद प्रबंधन' से आगे बढ़कर 'विवाद रोकथाम' की दिशा में काम करना होगा। इस मौके पर राजस्व सचिव अरविंद श्रीवास्तव ने बताया कि वित्त वर्ष 2025-26 में 2.24 लाख अपीलों का निपटान किया गया, जो एक साल पहले से 30 प्रतिशत अधिक है। उन्होंने कहा कि विभाग ने स्पष्ट विधायी मसौदा तैयार करने, प्रक्रियागत नियमों को सरल बनाने, प्रौद्योगिकी के अधिक उपयोग और प्रक्रियाओं के मानकीकरण के जरिए अस्पष्टता और विवादों को कम करने के प्रयास किए हैं। श्रीवास्तव ने कहा,

इन उपायों को और मजबूत करने की आवश्यकता है ताकि राजस्व की सुरक्षा के साथ कर विवादों का तेजी और अधिक दक्षता से निपटान किया जा सके। वहीं, केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) के चेयरमैन रवि अग्रवाल ने कहा कि शिकायतों के समाधान में भी सुधार हुआ है और समय में काफी कमी आई है। उन्होंने कहा कि पिछले वित्त वर्ष में विभाग ने केंद्रीकृत जन शिकायत निपटान और निगरानी प्रणाली (सीपीग्राम्स) के तहत 77,765 शिकायतों में से 72,933 शिकायतों का समाधान कर दिया। इसके साथ, ई-निवारण के तहत आई कुल 3,43,269 शिकायतों में 95 प्रतिशत को निपटाया गया। उन्होंने कहा कि विभाग अब बार-बार आने वाली शिकायतों के मूल कारणों को दूर करने पर भी काम कर रहा है, ताकि करदाताओं को शुरुआत में ही कम समस्याओं का सामना करना पड़े।

खर्चों के बोझ से प्रॉफिट 43 प्रतिशत लुढ़का, मगर रेवेन्यू और प्रोडक्शन में आई भारी बढ़त

(एजेंसी)

ज्यादा खर्चों के कारण जिंदल स्टील का जून तिमाही में एकीकृत शुद्ध लाभ 43.53 प्रतिशत घटकर 843.80 करोड़ रुपये रह गया। इस्पात कंपनी ने शुक्रवार को शेयर बाजार को अप्रैल-जून 2026 तिमाही के नतीजे की सूचना दी। पिछले साल की इसी तिमाही में उसका शुद्ध मुनाफा 1,495.97 करोड़ रुपये था। हालांकि, इस अवधि में कंपनी में आय बढ़कर 15,501.32 करोड़ रुपये हो गई जो वित्त वर्ष 2025-26 की पहली तिमाही में 12,324.88 करोड़ रुपये थी। आलोच्य अवधि में जिंदल स्टील का खर्च 14,296.36 करोड़ रुपये हो गया। एक साल पहले की समान तिमाही में यह 10,306.97 करोड़ रुपये था। जिंदल स्टील ने एक अलग बयान में कहा कि कंपनी ने 30 जून, 2026 तक अपना एकीकृत शुद्ध

कर्ज घटाकर 15,927 करोड़ रुपये कर दिया है जो मार्च 2026 में 16,019 करोड़ रुपये था। नवीन जिंदल समूह की कंपनी ने कहा कि तिमाही के लिए कुल पूंजी परिव्यय 1,959 करोड़ रुपये था। इस तिमाही में उसका कच्चा इस्पात उत्पादन 15 प्रतिशत बढ़कर 24 लाख टन हो गया, जो वित्त वर्ष 2025-26 की पहली तिमाही में 20.9 लाख था। बिक्री 17 प्रतिशत से ज्यादा बढ़कर 22.3 लाख टन हो गई।

आईडीएफसी फर्स्ट बैंक का पहली तिमाही में शुद्ध लाभ 132.4 प्रतिशत बढ़कर रिकॉर्ड 1,075 करोड़ रुपये हुआ

(एजेंसी)

नयी दिल्ली। 25 जुलाई निजी क्षेत्र के आईडीएफसी फर्स्ट बैंक का चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में शुद्ध लाभ 132.4 प्रतिशत बढ़कर 1,075 करोड़ रुपये हो गया। यह बैंक का किसी तिमाही में अब तक का सर्वाधिक शुद्ध लाभ है। बैंक ने शनिवार को शेयर बाजार को अप्रैल-जून 2026 तिमाही के नतीजे की सूचना दी। एक साल पहले की समान तिमाही में उसका शुद्ध लाभ 463 करोड़ रुपये था। बैंक का कुल ग्राहक कारोबार 30 जून, 2026 तक 18.6 प्रतिशत बढ़कर 6,04,776 करोड़ रुपये हो गया, जो एक वर्ष पहले 5,10,031 करोड़ रुपये था। बैंक ने कहा कि उसकी ऋण एवं अग्रिम राशि 30 जून, 2026 तक 20.6 प्रतिशत बढ़कर 3,05,370

करोड़ रुपये हो गई, जो 30 जून, 2025 को 2,53,233 करोड़ रुपये थी। समीक्षाधीन तिमाही के अंत तक बैंक का सकल गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (एनपीए) अनुपात घटकर 1.51 प्रतिशत रह गया, जो वित्त वर्ष 2025-26 की समान तिमाही में 1.97 प्रतिशत था। इसी तरह शुद्ध एनपीए अनुपात भी 0.55 प्रतिशत से सुधरकर 0.44 प्रतिशत पर आ गया। जून तिमाही में बैंक का शुद्ध ब्याज मार्जिन भी बढ़कर 5.96 प्रतिशत हो गया, जो पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में 5.71 प्रतिशत था।

एलन मस्क की कंपनी स्पेसएक्स ने टेक्सास से लॉन्च किया सबसे शक्तिशाली स्टारशिप रॉकेट

(एजेंसी)

स्पेसएक्स के विशाल स्टारशिप रॉकेट ने शुक्रवार को एक और परीक्षण उड़ान भरी और इस दौरान स्टारलिंक के सबसे उन्नत 20 उपग्रहों को अंतरिक्ष में सफलतापूर्वक प्रक्षेपित किया गया। स्टारशिप ने कंपनी के टेक्सास स्थित दक्षिणी प्रक्षेपण केंद्र से उड़ान भरी। यह रॉकेट 407 फुट (124 मीटर) ऊंचा है। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने इस उड़ान पर करीबी नजर रखी क्योंकि भविष्य में चंद्रमा पर चालक दल को उतारने के लिए स्टारशिप का इस्तेमाल 'लूनर लैंडर' के रूप में किया जा सकता है। करीब एक घंटे की इस उड़ान के बाद यह हिंद महासागर में बिना किसी बाधा के पानी में उतरा और इसने अपनी यात्रा समाप्त की। एलन मस्क की कंपनी स्पेसएक्स ने पहले चरण के 33 इंजनों में से छह इंजन बदले हैं। पिछले सप्ताह ये इंजन काम नहीं कर पाए थे, जिसके कारण प्रक्षेपण को अंतिम क्षणों में रद्द करना पड़ा था। इससे पहले मई में हुई स्टारशिप की पिछली परीक्षण उड़ान के दौरान भी इंजनों में तकनीकी खराबी आई थी, जिसके कारण बूस्टर को नियंत्रित तरीके से वापस नहीं लाया जा सका था। इस मिशन में अंतरिक्षयान पूर्व दिशा में अपनी उड़ान जारी रखते हुए लगभग 200 किलोमीटर की ऊंचाई पर एक-एक करके स्टारलिंक उपग्रहों को सफलतापूर्वक छोड़ता रहा और फिर इसने पृथ्वी के वायुमंडल में दोबारा प्रवेश किया। यह दुनिया के सबसे बड़े और सबसे शक्तिशाली रॉकेट की 13वीं उड़ान थी और नए संस्करण वी3 की इस वर्ष दूसरी उड़ान थी। पिछली परीक्षण उड़ान की तरह इस बार भी न तो बूस्टर को बचाने की योजना थी और न ही अंतरिक्षयान को। दोनों को समुद्र में गिरना था। स्टेनलेस स्टील से बना यह अंतरिक्षयान हिंद महासागर के ऊपर कुछ समय तक मंडराता रहा और फिर टेक्सास से 16,000 किलोमीटर (10,000 मील) दूर पानी में उतरा। स्पेसएक्स के अनुसार यह वायुमंडल में वापस लौटने का सबसे सफल अभ्यास था। स्पेसएक्स की इंजीनियर केट टाइस ने कहा, ''हम इस सफलता से बेहद उत्साहित हैं। यह वास्तव में लकी फ्लाइट 13 रही।'' स्टारशिप के पेज सरीखे डिस्पेंसर से बाहर निकलने के बाद नए स्टारलिंक उपग्रहों ने पहले से कक्षा में मौजूद पुराने स्टारलिंक उपग्रहों के साथ लेजर के माध्यम से संचार स्थापित किया। वर्तमान में 10,000 से अधिक स्टारलिंक उपग्रह

इंटरनेट सेवा प्रदान कर रहे हैं, जिससे स्पेसएक्स के पास दुनिया का सबसे बड़ा उपग्रह समूह है। नए प्रक्षेपित स्टारलिंक उपग्रहों में से छह पर कैमरे लगाए गए थे। इन कैमरों ने उड़ान के अंत में स्टारशिप की 'हीट शील्ड' की तस्वीरें लीं और अंतरिक्षयान के समुद्र में लहरों के बीच तैरते रहने के बावजूद बेहद स्पष्ट तस्वीरें सफलतापूर्वक भेजीं। 'हीट शील्ड' पर ऐसे सेंसर भी लगाए गए थे जो प्रक्षेपण के दौरान उस पर पड़ने वाले अत्यधिक दबाव को मापते हैं। नासा के प्रशासक जेरेड आइजैकमैन ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर लिखा,'' इस मिशन से मिलने वाली सीख को लेकर बेहद उत्साहित हूं।

स्वत्वाधिकारी एक्सपर्ट टाइम्स नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक, सम्पादक जितेन्द्र कुमार द्वारा शॉप नम्बर-2 प्लॉट नम्बर-17, ग्राउण्ड फ्लोर, ब्लॉक एल-3, नियर भोला चौक, मोहन गार्डन, उत्तम नगर, पश्चिमी दिल्ली, दिल्ली-110059 से प्रकाशित एवं मुद्रक दिनेश शर्मा द्वारा स्वास्तिका क्रीएशन 19 डीएसआईडीसी शेड्स, स्कीम 3, ओखला फेज-2 नईदिल्ली-110020 से मुद्रित। रजिस्ट्रेशन नं0- DLBIL/26/A3806 मो0 नं0- 9266066092

❖पीआरबी एक्ट के अंतर्गत सभी विवादों का न्याय क्षेत्र द्वारका कोर्ट दिल्ली होगा। समाचार पत्र में प्रकाशित लेख अथवा समाचार से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।